Mere Nath! மேரே நாத்! मेरे नाथ! ਮੇਰੇ ਨਾਥ! મેરે નાથ! میرے رب!

परम सन्त रामसुखदासजी महाराज

स्वामीजी के भजन, संकीर्तन, साधक संजीवनी, सत्संग, प्रश्नोत्तरी के साथ-साथ सेठजी, भाईजी, **शरणानन्दजी, देवकीजी** के प्रवचन, भागवत कथा, भक्तमाल कथा, रामायण पाठ, हनुमान चालीसा आदि का अनुपम संग्रह प्राप्ति हेतु **On Line** रेडियो -

सन्तवाणी रेडियो 14.4 GB, ऋषिकेश

14.4 GB Audio Data

Radio Guide Book

Sethji

Bhaiji

Sharnanandji

Devkiji

Rajendradasji

Kshamaramji

अद्वितीय शरणानन्दजी के प्रति बड़े सन्तों के मार्मिक विचार

1. गोविन्ददेव गिरिजी महाराज एवं गुरु सत्यमित्रानन्दजी- (19-07-2023 सायं)

शरणानन्दजी की बातें वेदव्यासजी का जूठन नहीं है। जहाँ से उपनिषद आये वहीं से शरणानन्दजी के वाक्य आते हैं। जीवनभर एक भी ग्रन्थ न पढने वाले ये महात्मा, जिनके एक-एक वाक्य पर ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं।

2. पथमेड़ा महाराजजी गौ-ऋषि दत्तशरणानन्दजी- (9-8-2023, 27-9-2023)

इतना सरल, स्पष्ट, सूत्रात्मक, साफ 'सत्य' शरणानन्दजी की वाणी से पूर्व किसी से प्रकट नहीं हुआ। कलियुगी जीवों के लिए आवश्यक यह वाणी है। देश और दुनिया की मानव जाति के उत्थान का अपूर्व सन्देश है। यह अनुपम वाणी सभी दर्शनों का सार भी है, सभी दर्शनों से श्रेष्ठ भी है।

3. स्वामी रामसुखदासजी महाराज - (MSS प्रवचन से तथा 5.5.2000, 16.00 hrs.)

शरणानन्दजी के समान मैं मानता नहीं हूँ किसी संतको। उन्होंने जो लिखा है, उसके आगे कुछ नहीं है। **उनकी बातें सब ग्रंथों का अन्तिम सार है।** उनकी पुस्तकें पढ़ने से बड़े-बड़े दार्शनिक, पंडितों में भी हलचल मच जायेगी। ऐसी विचित्र बातें बतायी हैं, जो आदमी के कान खुल जाये, आँख खुल जाये, होश आ जाये। **सत्य के अनुयायी बनें, व्यक्ति या सम्प्रदाय के नहीं।**

4. Dr. Satinder Dhiman (Ph. D., Ed.D. - U.S.A.)

All the darshans /philosophies of the world on one side, and Sharnanandji's darshan on one side. He is certainly the most **"Unique"** and **"Original"** of all thinkers and saints. If his ideas become truly known, it will certainly create a **"Revolution"** in the world !

5. स्वामीनारायण सन्त ज्ञानजीवनदासजी- (सागर कथा-15.3.2013)

स्वामी शरणानन्दजी का साहित्य पढ़ने जैसा है। जैसे बड़े-बड़े भारतीय ऋषि मुनि हो गये, आर्षद्रष्टा हो गये, वैसे वे आज के आर्षद्रष्टा ऋषि हैं। उनकी बातें **'सातवाँ दर्शन'** जैसी अद्भुत हैं।

6. स्वामी अनुभवानन्दजी सरस्वती- (व्यावहारिक गीता-5 से)

शरणानन्दजी का जीवन पढ़ो आप, उन्होंने कोई पढ़ाई नहीं की थी, वे प्रज्ञाचक्षु थे। उनके एक-एक जो अनुभव हैं, उसको आप **'पाँचवा वेद'** कह सकते हैं, इतने श्रेष्ठ अनुभव हैं।

7. स्वामी अखण्डानन्दजी सरस्वती - (मोरारी बापू, मानस सुरथेनु, 20/11/2012)

मिलावट वाला वेदान्त सुनना है तो हमारे पास आओ और शुद्ध, विशुद्ध, दो टूक वेदान्त सुनना है तो स्वामी शरणानन्दजी के पास जाओ।

Videos of all above quotes are available on youtube a/c "Santo Ka Khazana"

For Books & Pravachans refer - www.swamisharnanandji.org

शरणानन्दजी केन्द्रित अनेक संतों की छोटी-छोटी दुर्लभ विडियो प्राप्ति हेतु youtube a/c "Santo Ka Khazana" के QR को Compulsary Scan करें।

श्रीहरिः

विलक्षण सन्त विलक्षण वाणी

हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं।

मैं केवल भगवान का ही हूँ
केवल भगवान ही मेरे अपने हैं

परम श्रद्धेय

श्रीसेठजी व स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

के सत्संग, भजन व कीर्तन का विलक्षण संग्रह

卐 श्रीहरिः 卐

गंगाजल, गीताजी से कल्याण मुक्ति

जिसने थोड़ी भी गीता पढ़ ली, याद कर ली, थोड़ा गंगाजल आचमन कर लिया–यमराज के यहाँ उसका हिसाब नहीं चलता, खाता ही उठ जाताहै। अतः ये भगवानके अवतारके पाँच श्लोक हैं (गीताजी अध्याय ४/६ से १० तक) रोजाना पाठ करनेसे अन्तकालमें भगवान यादआते हैं। अतः रोजाना गीताजी का पाठ करनेसे, गंगाजल का आचमन लेने से मुक्ति हो जाये, कल्याण हो जाये।

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

*अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया।।१।।
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।२।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।३।।
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन।।४।।
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः।।५।।

www.swamiramsukhdasji.org (गीता अध्याय ४/६ से १० तक)

आदरणीय राजेन्द्र कुमार धवनजी ने 50+ वर्ष श्रद्धेय रामसुखदासजी का संग किया है, उनकी साधक-संजीवनी सहित प्रायः सभी पुस्तकों का संकलन भी किया है और उनका क्षीर-नीर का स्वभाव विश्व में अजोड़ और दुर्लभ है।

Scan for Books of Gita Prakashan pdf

यह दो QR Code के बिना पुस्तक की दुर्लभता और हितैषिता अधूरी रह जाती!

सत्संग की रहस्यमयी बातें

Scan for Dhawanji's Youtube Videos

विषय सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ
1-2	पाँच श्लोक गीताजी व महिमा	3
3-142	नित्य स्तुति, प्रार्थना व सत्संग	3
143-239	सत्संग के मोती (संक्षिप्त सत्संग) (अलौकिक संतकृपा बेड़ापार, भगवानके है, एक लगन, हे नाथ! पुकार महिमा एवं विशेष संक्षिप्त सत्संग)	6
240-297	वासुदेवः सर्वम् सत्संग	8
298-349	इकलौती बातें व अमूल्य सत्संग	10
350-453	विशेष दिव्य मार्मिक सत्संग (भगवद् संबंध, प्रेम, शरणागति, अनन्यता, सन्त सत्संग, चेतावनी, उद्देश्य, अनुकूलता प्रतिकूलता, स्वभाव सुधार बुराई रहित, निषेधात्मक साधन,सर्वभूतहिते रताः, कृपा, प्रचार प्रसार, परम सेवा, पंचामृत, स्वामीजी को भेंट,....)	10
454-481	त्यौहार सत्संग भजन (जन्माष्टमी, राधाष्टमी, गीता जयन्ती, गुरु पूर्णिमा, गणेश चतुर्थी, शरद् पूर्णिमा, श्रीराम जन्म व विवाह...)	13
482-682	भक्तों की बातें व स्वामीजी मीठी मीठी हँसी	13
683-687	नानीबाई का माहेरा (श्रीस्वामीजी वाणीमें)	14
688-726	भजन माधुर्य (विशेष भजन, स्वामीजी वाणीमें भजन, भगवानके हैं, सन्त सत्संग महिमा, प्रेम, शरणागति, वासुदेव सर्वम्, हे नाथ भजन, चेतावनी, गंगा, गीता, मीराबाई व अन्य)	14
727-763	संकीर्तन रस (स्वामीजी वाणीमें कीर्तन, हरे राम हरे कृष्ण, राम राम श्रीराम जय राम, श्रीकृष्ण गोविन्द, हे नाथ, हरिः शरणम् गोपाला तेरा प्यारा नाम, 84 कोस, जब सन्त मिलन)	15
764-819	जीवनोपयोगी सत्संग (घर कैसे सुधरे, भगवद्, चेतावनी, तात्विक व अन्य)	16
820-908	चुप साधन सत्संग/करण निरपेक्ष साधन	16
909-981	नवान्हपरायण रामायण पाठ (सत्संग भजन सहित) अखण्ड रामायण पाठ, सुन्दरकाण्ड (आरती,हनुमान चालीसा सहित) अखण्ड 108 हनुमान चालीसा	16

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ
982-1238 1239-1432 1433-1636	अध्याय 01 से 06 अध्याय 07 से 12 अध्याय 13 से 18 **गीता साधक-संजीवनी**	17
1637-1720	**सम्पूर्ण गीता** (श्रीस्वामीजी वाणीमें गीता पाठ, संगीतमयी गीता, गीता सीखो, गीता माधुर्य, गीता सार, गजल गीता, गीता सुधा तरंगिनी व दो घण्टे में गीतापाठ)	21
1721-1820	**सेठजी श्रीजयदयालजी गोयन्दकाजी वाणी** (सत्संग, श्रीसेठजी पेड, ध्यानावस्थामें प्रभुसे वार्तालाप, कीर्तन)	21
1821-2003	**भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारजी वाणी** (सत्संग, रासपञ्चाध्यायी, वेणुगीत, श्रीकृष्ण बाललीला)	22
2004-2184	**स्वामीजी श्रीशरणानन्दजी महाराज व देवकी माँ वाणी** (सत्संग, प्रार्थना व हरि शरणम्)	22
	प्रश्नोत्तर मणिमाला	22
2185-2240	भक्ति-प्रेम, व्याकुलता, लगन संबंधी प्रश्नोत्तर	
2241-2294	वासुदेवः सर्वम् व चुप साधन संबंधी प्रश्नोत्तर	
2295-2388	साधक शंका समाधान संबंधी प्रश्नोत्तर	
2389-2431	गुरु, सन्त व गीता संबंधी प्रश्नोत्तर	
2432-2441	स्वभाव सुधार व पिता की सीख	
2442-2677	गृहस्थ व व्यवहार संबंधी प्रश्नोत्तर	
2678-2770	**अन्तिम वर्षों में पूजनीय श्रीस्वामीजी के विशेष सत्संग (सन् 2000-2005 तक)** व अन्तिम सत्संग	32
2771-2785	**गीताके परम प्रचारक पुस्तक**	32
2786-2796	**कल्याणके तीन मार्ग पुस्तक-श्रीस्वामीजी वाणीमें**	32
2797-2850	**आरती संग्रह, हनुमान चालीसा व अन्य** (श्रीगणेशजी, श्रीकुंज बिहारीजी, गीताजी, गंगाजी, हनुमानजी, श्रीसीताजी, श्रीराधाजी, जय जानकीनाथा, जय जगदीश हरे, षोडशगीत, श्रीराधाकृपाकटाक्ष, मधुराष्ट्क, अष्टयाम् लीला)	32
2851-2855	**स्तोत्र संग्रह** (विष्णुसहस्त्रनाम्, नारायण कवच, रामरक्षास्तोत्र...)	32
2856-2969	**भागवत कथा**	32
2970-3000	**भक्तमाल कथा**	32

नित्य स्तुति,प्रार्थना व सत्संग

क्रम संख्या	विषय	समय
1,2	गीताजी पाँच श्लोक अध्याय 4(6–10) व महिमा	3,5 मिनट
3	बासुरी वादन	5 मिनट
4	नित्य स्तुति	11 मिनट
5	गीताजी अध्याय 1(1-7)+ हरिः शरणम्	9 मिनट
6	सत्संग–एकै साधे सब सधे 3-8-91 प्रातः5	30 मिनट
7	गीताजी अध्याय 1(8-17)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
8	सत्संग–परमात्मप्राप्ति का सरटिफिकेट 18-4-91 प्रातः5	24 मिनट
9	गीताजी अध्याय 1(18-27)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
10	सत्संग–नाथ थारे शरणे आयो जी 5-6-96 प्रातः5	25 मिनट
11	गीताजी अध्याय 1(28-37)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
12	सत्संग–पंचामृत,असली कीमती पूंजी समय 9-6-92 प्रातः5	23 मिनट
13	गीताजी अध्याय 1(38-47)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
14	सत्संग–शरणागत के आश्रित 6-4-97 प्रातः5	33 मिनट
15	गीताजी अध्याय 2(1-10)+ हरिः शरणम्	8 मिनट
16	सत्संग–कच्चे से पक्के हो जाओ 6-1-90 प्रातः5	30 मिनट
17	गीताजी अध्याय 2(11-20)+ हरिः शरणम्	8 मिनट
18	सत्संग–अपने कर्मों द्वारा भगवानका पूजन 9-1-98 प्रातः5	28 मिनट
19	गीताजी अध्याय 2(21-30)+ हरिः शरणम्	8 मिनट
20	सत्संग–अनुभवी संतों के वचन हाथी दाँत 31-12-92 प्रातः5	21 मिनट
21	गीताजी अध्याय 2(31-40)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
22	सत्संग–उद्देश्य कल्याण की इच्छा 31-1-93 प्रातः5	32 मिनट
23	गीताजी अध्याय 2(41-50)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
24	सत्संग–रात दिन हे नाथ! पुकारो, बेड़ापार 17-6-93	35 मिनट
25	गीताजी अध्याय 2(51-61)+हरिः शरणम्	8 मिनट
26	सत्संग–खीर चोर भगवान 17-6-92 प्रातः5	25 मिनट
27	गीताजी अध्याय 2(62-72)+हरिः शरणम्	8 मिनट
28	सत्संग–अहंता परिवर्तन 21-8-93 प्रातः5	21 मिनट
29	गीताजी अध्याय 3(01-10)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
30	सत्संग–चार प्रकार दीक्षा 23-6-89 प्रातः5	21 मिनट
31	गीताजी अध्याय 3(11-21)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
32	सत्संग–असाधन का त्याग 23-4-93 प्रातः5	23 मिनट
33	गीताजी अध्याय 3(22-32)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
34	सत्संग–सर्वभूतहिते रताः 28-4-93 प्रातः5	29 मिनट
35	गीताजी अध्याय 3(33-43)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
36	सत्संग–देरी सुहानी नहीं चाहिये 21-3-93 प्रातः5	26 मिनट
37	गीताजी अध्याय 4(1-10)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
38	सत्संग–निषेधात्मक साधन 22-9-97 प्रातः5	27 मिनट
39	गीताजी अध्याय 4(11-20)+ हरिः शरणम्	7 मिनट
40	सत्संग–सत्संग का महत्त्व 23-6-93 प्रातः5	22 मिनट
41	गीताजी अध्याय 4(21-31)+हरिः शरणम्	7 मिनट

42	सत्संग–हम खिलौने हैं भगवान खेलते हैं 10-8-93 प्रातः5	24 मिनट
43	गीताजी अध्याय 4(32-42)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
44	सत्संग–निर्धन के धन राम 6-1-89 प्रातः5	30 मिनट
45	गी.अ. 5(1-10)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
46	सत्संग–सत्संग से गंगाजल ले जाओ 12-9-93 प्रातः5	22 मिनट
47	गी.अ. 5(11-20)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
48	सत्संग–भगवत् कृपा 11-10-93 प्रातः5	23 मिनट
49	गी.अ. 5(21-29)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
50	सत्संग–गीताजी महिमा, करण निर्पेक्ष साधन 27-5-91 प्रातः5	27 मिनट
51	गी.अ. 6(1-10)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
52	सत्संग–भाव,लगन की मुख्यता 28-10-93 प्रातः5	23 मिनट
53	गी.अ. 6(11-20)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
54	सत्संग–ठीक से समझने पर उम्रभर प्रश्न नहीं 16-2-91 प्रातः5	25 मिनट
55	गी.अ. 6(21-30)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
56	सत्संग–प्रेम की विलक्षणता 30-11-93 प्रातः5	28 मिनट
57	गी.अ. 6(31-39)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
58	सत्संग–कोटिम् त्यक्तवा हरिःस्मरेत् 14-5-94 प्रातः5	23 मिनट
59	गी.अ. 6(40-47)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
60	सत्संग–सब वासुदेव देखने का स्वभाव बनायें 19-10-98 प्रातः5	25 मिनट
61	गी.अ. 7(1-10)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
62	सत्संग–प्रेम की महत्ता 14-11-94 प्रातः5	25 मिनट
63	गी.अ. 7(11-20)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
64	सत्संग– श्रीसेठजी संस्मरण 27-1-95 प्रातः5	26 मिनट
65	गी.अ. 7(21-30)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
66	सत्संग–संबंध तत्काल व अखण्ड होता हैं 20-2-95 प्रातः5	26 मिनट
67	गी.अ. 8(1-10)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
68	सत्संग–सावधानी ही साधना है 6-1-90 प्रातः5 24-2-95	27 मिनट
69	गी.अ. 8(11-20)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
70	सत्संग–वासुदेवः सर्वम् 25-2-95 प्रातः5	23 मिनट
71	गी.अ. 8(21-28)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
72	सत्संग–एक कुर्सी खाली है 11-4-95 प्रातः5	24 मिनट
73	गी.अ. 9(1-11)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
74	सत्संग–दोष दृष्टि निषेध 18-4-95 प्रातः5	29 मिनट
75	गी.अ. 9(12-22)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
76	सत्संग–सुखेच्छा छूटने का सुगम उपाय 25-10-95 प्रातः5	29 मिनट
77	गी.अ. 9(23-34)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
78	सत्संग–एक लक्ष्य 4-6-91 प्रातः5	24 मिनट
79	गी.अ. 10(1-11)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
80	सत्संग–दृढ़ निश्चय महिमा 16-4-93 प्रातः5	22 मिनट
81	गी.अ. 10(12-21)+ हरिः शरणम्	17 मिनट
82	सत्संग–योग भ्रष्ट की गति 23-4-97 प्रातः5	25 मिनट
83	गी.अ. 10(22-31)+ हरिः शरणम्	17 मिनट

84	सत्संग – वासुदेव सर्वम् का अनुभव कैसे करें 28-10-94 प्रात:5	30 मिनट
85	गीताजी अध्याय 10(32-42) + हरि: शरणम्	27 मिनट
86	सत्संग – घरोंमें, स्कूलोंमें प्रचार करो 24-1-95 प्रात:5	23 मिनट
87	गी.अ. 11(1-11) + हरि: शरणम्	27 मिनट
88	सत्संग – भगवानके मुकुटमणि हो जाये 5-11-95 प्रात:5	30 मिनट
89	गी.अ. 11(12-22) + हरि: शरणम्	27 मिनट
90	सत्संग – कार्य करते समय उद्देश्य को याद रखें 30-1-93 प्रात:5	27 मिनट
91	गी.अ. 11(23-33) + हरि: शरणम्	27 मिनट
92	सत्संग – मेरे तो गिरधर गोपाल 4-1-89 प्रात:5	27 मिनट
93	गी.अ. 11(34-44) + हरि: शरणम्	27 मिनट
94	सत्संग – हम भगवान के हैं 11-2-97 प्रात:5	24 मिनट
95	गी.अ. 11(45-55) + हरि: शरणम्	27 मिनट
96	सत्संग – सीताराम चरण रति मोरे अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें 30-1-97 प्रात:5	28 मिनट
97	गी.अ. 12(1-10) + हरि: शरणम्	27 मिनट
98	सत्संग – कमी खटकनी चाहिये 19-11-96 प्रात:5	28 मिनट
99	गी.अ. 12(11-20) + हरि: शरणम्	27 मिनट
100	सत्संग – हम निर्दोष हैं 11-11-96 प्रात:5	25 मिनट
101	गी.अ. 13(1-11) + हरि: शरणम्	27 मिनट
102	सत्संग – सब रामजी हो जाओ 24-6-96 प्रात:5	26 मिनट
103	गी.अ. 13(12-22) + हरि: शरणम्	27 मिनट
104	सत्संग – निर्दोषिता सुरक्षित रखने का उपाय 22-11-96 प्रात:5	30 मिनट
105	गी.अ. 13(23-34) + हरि: शरणम्	27 मिनट
106	सत्संग – साधक के लिये परम उपयोगी 27-5-97 प्रात:5	24 मिनट
107	गी.अ. 14(1-10) + हरि: शरणम्	27 मिनट
108	सत्संग – राम रस पीयो 14-08-97 प्रात:5	22 मिनट
109	गी.अ. 14(11-20) + हरि: शरणम्	27 मिनट
110	सत्संग – संत माँ, भगवान पिता 23-5-98 प्रात:5	26 मिनट
111	गी.अ. 14(21-27) + हरि: शरणम्	27 मिनट
112	सत्संग – श्रद्धा, सेवा और सदुपयोग 21-6-90	22 मिनट
113	गी.अ. 15(1-10) + हरि: शरणम्	27 मिनट
114	सत्संग – मनुष्य योनी साधन योनी है 2-12-98 प्रात:5	26 मिनट
115	गी.अ. 15(11-20) + हरि: शरणम्	27 मिनट
116	सत्संग – गृहस्थ में प्रेम के लिये 28-9-92प्रात:5	23 मिनट
117	गी.अ. 16(1-12) + हरि: शरणम्	27 मिनट
118	सत्संग – सावधानी की आवश्यकता 5-2-96 प्रात:5	29 मिनट
119	गी.अ. 16(13-24) + हरि: शरणम्	27 मिनट
120	सत्संग – भगवत् संबंध, गीताप्रेस पुस्तक 7-2-97 प्रात:5	29 मिनट
121	गी.अ. 17(1-10) + हरि: शरणम्	27 मिनट
122	सत्संग – गंगाजी महिमा 19-4-91 प्रात:5	28 मिनट
123	गी.अ. 17(11-20) + हरि: शरणम्	27 मिनट
124	सत्संग – वृत्तियों को ठीक करने के उपाय 21-10-93 प्रात:5	21 मिनट
125	गी.अ. 17(21-28) + हरि: शरणम्	27 मिनट

126	सत्संग – लगन भूख की कमी 25-3-97 प्रात:5		26 मिनट
127	गीताजी अध्याय 18(1-10) + हरि: शरणम्		27 मिनट
128	सत्संग – सरल स्वभाव और अपनापन 15-8-97 प्रात:5		24 मिनट
129	गी.अ. 18(11-20) + हरि: शरणम्		27 मिनट
130	सत्संग – भजन रुपी धन साथ रहेगा 16-9-97 प्रात:5		28 मिनट
131	गी.अ. 18(21-30) + हरि: शरणम्		27 मिनट
132	सत्संग – घर में प्रेम और सेवा 26-9-99 प्रात:5		30 मिनट
133	गी.अ. 18(31-40) + हरि: शरणम्		27 मिनट
134	सत्संग – विशेष कृपा में आये हुए हैं 8-5-01 प्रात:5		28 मिनट
135	गी.अ. 18(41-50) + हरि: शरणम्		27 मिनट
136	सत्संग – विलक्षण प्रेम और कृपा 9-12-96 प्रात:5		26 मिनट
137	गी.अ. 18(51-60) + हरि: शरणम्		27 मिनट
138	सत्संग – आज्ञापालन 23-1-96 प्रात:5		29 मिनट
139	गी.अ. 18(61-70) + हरि: शरणम्		27 मिनट
140	सत्संग – सेवा की आवश्यकता 11-5-96 प्रात:5		25 मिनट
141	गी.अ. 18(71-78) + हरि: शरणम्		27 मिनट
142	सत्संग – गृहस्थाश्रम एक पाठशाला 23-9-92 प्रात:5		21 मिनट

सत्संग के मोती (संक्षिप्त सत्संग)

अलौकिक संतकृपा बेड़ापार (सत्संग व भजन)

143	एक बार साचे मन से		25 मिनट
144	भगवान की कृपा अलौकिक विलक्षण हो रही		12 मिनट
145	लाखों को भोजन देने की अपेक्षा एक को सत्संग में लगाना श्रेष्ठ		11 मिनट
146	गीताजी पाँच श्लोक एवं गंगाजल की महिमा		12 मिनट
147	एक मेरी शरण आ – मामेकं शरणम् व्रज		15 मिनट
148	हरेक काम भगवान का पूजन		43 मिनट
149	राम नाम महिमा व कीर्तन		8 मिनट

हे नाथ ! पुकार महिमा (सत्संग व भजन)

150	हे नाथ! पुकार – श्रीस्वामीजी वाणी में		1 मिनट
151	भजन – 'मंत्रों का यह महामंत्र है – हे मेरे नाथ'		7 मिनट
152	हे नाथ! पुकारो – सब आफत मिट जायेगी		4 मिनट
153	हे नाथ! पुकारो बहुत जल्दी काम बनेगा	3-3-01 प्रात:11	7 मिनट
154	हे नाथ! पुकारो लोक परलोक सब सुधार जायेगा		8 मिनट
155	हे नाथ! ये राम बाण उपाय है	1-12-92 प्रात:5	10 मिनट
156	हे नाथ! पुकार अहं मिटाने के लिये	5-6-99 सायं4	7 मिनट
157	हे नाथ! पुकारो वृत्तियों को ठीक करनेके लिये	27-11-93 दोप.2	10 मिनट
158	मन इधर उधर जाता-सबकी एक दवा-हे नाथ!	4-10-99 प्रात:5	11 मिनट
159	भगवान में अनुराग के लिये हे नाथ! पुकारो	2-6-99 प्रात:5	8 मिनट
160	संसार को अपना नहीं मानने की शक्ति माँगो	9-2-98 प्रात:5	6 मिनट
161	हे नाथ! नहीं भूलने के लिये क्या किया जाये	8-5-98 प्रात:9	6 मिनट
162	थोड़ी थोड़ी देर में कहते – हे नाथ! भूलूँ नहीं	1-10-99 प्रात:9	6 मिनट
163	आप भगवान के लिये व्याकुल हो जाओ	1-8-01 प्रात:5	8 मिनट

164	सच्चे हृदयसे पुकारो और निश्चिन्त हो जाओ	3-10-96 प्रातः8	7 मिनट
165,166	भगवान से विनय प्रार्थना	21-11-93, 23-11-93	14,18 मिनट
167	हे नाथ! पुकार साधन की सिद्धि-हर 10 मिनट में पुकार नियम		58 मिनट
	भगवानके हैं व एक लगन सत्संग		
168	भगवान की प्राप्ति अपने घर की प्राप्ति है		15 मिनट
169	हे नाथ मैं आपका हूँ व भजन		16 मिनट
170	मेरे तो गिरधार गोपाल दूसरो न कोई		23 मिनट
171	भगवानके मन में मिलने की आ जाये व भजन		20 मिनट
172	एक लगन कैसे लगे, प्रेम भगवानसे माँगो		20 मिनट
	विशेष संक्षिप्त सत्संग		
173,174	समय तेजी से जा रहा है 6-1-92, ऐसा मौका नही मिलेगा 17-3-2000		9,9 मिनट
175	विचार करने के बाद उसपर दृढ़ रहो	19-6-93 प्रातः5	9 मिनट
176	भगवानने मनुष्य शरीर क्यों दिया+भजन	04-01-95। प्रातः5	16 मिनट
177	बार बार नहीं पाईये मिनख जनम की मौज	15-04-96 प्रातः8	5 मिनट
178	भगवान ने मनुष्य को अपने लिये बनाया	21-12-92 प्रातः5	11 मिनट
179	आध्यात्मिक जगत में कहना मानते ही विलक्षणता	13-04-91 प्रातः8	15 मिनट
180	परमात्मा कृपा से मिलते हैं	12-07-03 प्रातः5	5 मिनट
181	सत्संग में कमाया हुआ धन मिलता है+भजन	07-04-95 रात्रि10	14 मिनट
182,183	संत महात्माओं के द्वारा विशेष लाभ 27-11-98, प्रेमी भक्तों का भाव		17,7 मिनट
184	प्रतिकूलता में भगवानकी कृपा देख प्रसन्न रहें		7 मिनट
185	प्रतिकूलता में प्रसन्न रहने से नया साधन	05-02-04 सायं 3	11 मिनट
186	विपरीत परिस्थिति में कृपा मानना भजन है+भजन	11-09-93 प्रातः5	16 मिनट
187	अपने कर्मों के द्वारा भगवानका पूजन करें		7 मिनट
188	भगवानकी कृपा के सन्मुख हो जाओ	26-03-00 सायं 3	6 मिनट
189	परमात्मा की प्राप्ति से निराश नहीं होना चाहिये	20-05-01 प्रातः5	12 मिनट
190	भगवानकी शरणमें,भगवानका दूध पीते-पीते बड़े हो जाओ	5-6-96 प्रातः5	9 मिनट
191	चिन्ता का कन्यादान भगवानको कर निश्चिन्त+भजन	7-11-97 सायं 4	18 मिनट
192	भगवद् आश्रय लेकर निश्चिन्त,निर्भय,निःशोक	12-03-98 प्रातः5	9 मिनट
193	मैं भगवान का,भगवान मेरे-ये शरणागति है	25-02-96 प्रातः5	10 मिनट
194	हृदयमें धारण कर लो-मैं भगवान का हूँ	23-01-99 प्रातः5	7 मिनट
195	शरणागति का फल वासुदेवः सर्वम्	25-02-96 प्रातः5	11 मिनट
196	चिन्ता दीनदयाल को मो मन सदा आनन्द	20-09-99 सायं 4	8 मिनट
197	दुराचारी भी यदि पक्का निश्चय कर ले	07-06-92 प्रातः9	7 मिनट
198	भगवानके यहाँ बीमा बेच,किश्तें चुकातें रहो+भजन	19-10-93 सायं 3	10 मिनट
199	मेरे कहने से मान लो भगवानके हैं, जयकार	28-10-99 सायं 4	14 मिनट
200,201	सौदा पट जायेगा 17-4-98 प्रातः9, सब काम भगवानके नाते 13-06-92		8,11 मिनट
202	संसार का काम करते हुए परमात्मप्राप्ति	04-10-99 प्रातः5	9 मिनट

203	परमार्थिक पुस्तकों से विशेष लाभ+भजन	08-05-93 सायं 4	10 मिनट
204	गीताप्रेस पुस्तक प्रचार, पढ़ो और पढ़ाओ	16-7-96 प्रात:5	11 मिनट
205	भगवानके घर की दलाली	28-07-99 प्रात:8	11 मिनट
206	मेरा प्रचार करने के समान मेरा कोई प्यारा नहीं	20-08-93 प्रात:8	7 मिनट
207	परमार्थिक उन्नति में सब तरह की उन्नति	11-11-93 प्रात:5	6 मिनट
208	करने में सावधान होने में प्रसन्न	18-6-90प्रात:5	13 मिनट
209,210	प्रेम कैसे हो? प्रणाम और सेवा 3-6-93 प्रात:8, प्रेम का तत्व 10-6-98		20,6 मिनट
211,212	विश्वमात्र का हित 14-12-90, मेरे द्वारा किसीका अहित ना हो 19-11-95		7,6 मिनट
213,214	देने से कई गुना होकर मिलता है, परहित सरिस धरम नहिं भाई		7,13 मिनट
215	दूसरों को सुख कैसे हो	19-11-95 प्रात:5	17 मिनट
216	एक निष्ठ हो जाओ–भटकने से सिद्धि नहीं		10 मिनट
217,218	एम.ए का सर्टिफिकेट 11-4-94, भगवद्भाव से सबको प्रणाम 29-5-94		7,9 मिनट
219,220	मेरा प्रयास सफल हो जायेगा 10-10-01, किसी का बुरा नहीं करना		10,16 मिनट
221	वासुदेव: सर्वम् की सिद्धि कैसे हो+भजन	14-06-96 प्रात:8	15 मिनट
222,223	गृहस्थ में रहते हुए संत 18-2-96, अत्याचारी को कैसे बुरा नहीं समझे?		11,10 मिनट
224	भगवानको याद करने मात्र से दु:ख मिट जायेगा	16-12-00 प्रात:8	7 मिनट
225	वर्षों का काम मिनटों में हो जायेगा	21-05-03 प्रात:5	11 मिनट
226	तत्त्वप्राप्ति के लिये व्याकुलता कैसे प्राप्त हो	16-10-94 प्रात:5	8 मिनट
227	स्वभाव सुधार की जरुरत	24-11-91 प्रात:5	9 मिनट
228	हम परमात्मा के हैं–हाँ महाराज+भजन	02-10-03 प्रात:5	23 मिनट
229	अन्तकालमें विशेष छूट	17-09-90 सायं 4	10 मिनट
230	बालकके जन्म व अन्तिम समय के सत्संग व भजन	11-04-92 सायं 4	10 मिनट
231	सुन्दर मौका आया हुआ	19-11-90 सायं 4	13 मिनट
232	सत्संग दुर्लभ,सावधान होकर लाभ लो+भजन	10-09-99 प्रात:5	15 मिनट
233	पुनर्जन्म को निमंत्रण मत देना	25-04-96 प्रात:5	9 मिनट
234	घर बैठे गंगा आ गयी	28-11-04 सायं 4	9 मिनट
235,236	हमने अपने आपको भगवानके भेंट कर दिया	06-09-95 प्रात:8	8,25 मिनट
237	इतने दिन से सत्संग कर रहे, भेंट पूजा नहीं करोगे?		4 मिनट
238,239	पुस्तक प्रचार की भिक्षा 19-6-93, मदिरा दुर्व्यसन छोड़ने की भेंट		6,14 मिनट

वासुदेवः सर्वम् सत्संग

240	वासुदेव: सर्वम् का श्रीगणेश	29-05-94 प्रात: 8	39 मिनट
241,242	तू ही तू	11-06-94 प्रात: 8	25,53 मिन.
243,244	बुराई रहित से वासुदेव: सर्वम् की सिद्धि	14-6-96 प्रात: 8	27,58 मिन.
245	भगवते नम:	17-07-02 प्रात:5	23 मिनट
246,247	निराली कृपा 04-04-03 दो.3, व्यापक परमात्मा संत रुप में 12-07-03		32,27 मिनट
248	मेरी भेंट पूजा, सरल हृदयसे स्वीकृति	26-07-03 प्रात:5	21 मिनट

249	साधक संजीवनी के विलक्षण भाव	7-5-01 प्रातः5	28 मिनट
250	अमृतमय बात है, सन्तों से मिली	7-6-01 सायं 4	40 मिनट
251	साधन और सिद्धि (24 घण्टे वासुदेव साधन)	13-6-01 प्रातः8	40 मिनट
252,253	नामजप से भी तेज 1-6-01 प्रातः8, राग द्वेष मार्ग के लुटेरे	9-4-2001	38,28 मिनट
254,255	दूध पीयो दूध 18-6-2000 प्रातः5, रात दिन दर्शन	07-07-02 सायं 4	27,53 मिनट
256	सिद्धि का सरल मंत्र	11-4-2001 सायं 4	37 मिनट
257	मेरे कहने से मान लो	13-08-01 सायं 4	56 मिनट
258	वासुदेवः सर्वम् में रास लीला का भाव	10-07-02 प्रातः5	23 मिनट
259,260	केवल भाव बदलना है 27-8-2001 प्रातः8, उकताना मत	20-07-01 प्रातः8	60,23 मिनट
261	विचार, निश्चय और अभ्यास करो	24-04-01 सायं 4	50 मिनट
262,263	भगवत् वचन मान लो 30-6-02 प्रातः5, अन्नदाता मान लो	3-7-02 प्रातः5	24,23 मिनट
264	परमात्मा सर्वोपरि राजा है	05-07-02 दो.3	28 मिनट
265	सर्वगत मानते ही बुद्धि शुद्ध	14 ~~05~~-07-02 प्रातः5	21 मिनट
266	हमारे प्रभु अद्भुत खिलाड़ी है	19-07-02 प्रातः5	23 मिनट
267,268	ये ब्रह्मविद्या है 20-7-2002, अन्तः करण शुद्धि–बुराई रहित	22-07-02	24,23 मिनट
269	खटका करते ही पट प्रकाश	23-07-02 प्रातः5	21 मिनट
270,271	हमारे प्यारे, हम उनके प्यारे 3-8-02 प्रातः5, मैं कल्पना मात्र है	14-8-02	23,23 मिनट
272	एकदेशियता से परा है अपरा	25-08-02 प्रातः5	25 मिनट
273	आप ही आप लीला कर रहे	02-11-02 प्रातः5	19 मिनट
274	तत्वज्ञान, प्रेम जो चाहे, सब हो जायेगा	5-11-02 प्रातः5	22 मिनट
275,276	चुप हो जाये 1-12-02, परमात्मा कण कण में परिपूर्ण है	8-12-02 प्रातः5	21,19 मिनट
277	जहाँ स्वयं है वहीं परमात्मा है	10-12-02 प्रातः5	21 मिनट
278	ब्रह्माजी बछड़े चुरा के ले गये	27-12-02 प्रातः5	20 मिनट
279	भोग संग्रह के परदे से भगवान दिखते नहीं	23-02-03 दो. 3	34 मिनट
280,281	मौका अवसर चेतावनी 10-4-03 प्रातः5, स्वीकार कर लो	5-6-03 प्रातः5	26,24 मिनट
282	वासुदेवः सर्वम् के अनुभवी भगवानसे भी श्रेष्ठ	18-06-03 प्रातः5	22 मिनट
283	हमारी दृष्टि में यह उपासना ठीक है	19-7-03 प्रातः5	20 मिनट
284	दूजी भावना कल्पना	25-8-03 प्रातः5	22 मिनट
285,286	कृपासाध्य है भाई 4-9-03 प्रातः5, 'है'–भगवान इष्ट है	7-03-03 प्रातः5	22,20 मिनट
287,288	व्यापक परमात्मा का ध्यान 19-1-00 प्रातः5, वासुदेव ही है	14-5-01 प्रातः5	27,25 मिनट
289	वासुदेवः सर्वम् में स्वीकृति	16-8-01 सायं 4	47 मिनट
290	दृष्टि बदल दो	28-05-03 प्रातः5	25 मिनट
291	मानना जानने से कम नहीं	9-07-03 प्रातः5	27 मिनट
292	वासुदेवः सर्वम् –यहाँ पहुँचना है	11-07-03 प्रातः5	27 मिनट
293	वासुदेवः सर्वम्– ये उपरारी है	14-7-03 प्रातः5	27 मिनट
294,295	सब जग ईश्वर रुप है	13-05-96 सायं 4	23,49 मि.
296,297	भगवानके रहने का पता	28-07-93 प्रातः8	32,46 मि.

इकलौती बातें व अमूल्य सत्संग

298	भगत मेरे मुकुटमणि 21-12-92 प्रातः5 + भजन		33 मिनट
299	कोई जन्म में जैसा काम नहीं हुआ वैसा काम होगा	25-11-01 सायं 4	13 मिनट
300	भगवानकी कृपामें तरान्तर हो जाओ	7-12-01 प्रातः5	21 मिनट
301	काम बहुत टेढ़ा है पर अभी सुगमता से हो जायेगा	17-3-02 सायं 3	21 मिनट
302	माखन माखन साधु जीमे ताता लगा है छाछ का	22-11-01 प्रातः5	21 मिनट
303	भीष्मजी से तेज हुए	23-3-02 सायं 4	32 मिनट
304	इसी क्षण निहाल हो जायेंगे – वासुदेवः सर्वम्	1-3-02 ~~22-11-01~~ सायं 4	19 मिनट
305	भगवान कलियुग की लीला कर रहे	1-03-02 सायं 4	7 मिनट
306	व्यक्ति की पूजा नहीं, सिद्धान्त का पालन	28-2-02 सायं 4	28 मिनट
307	शरण होना नहीं, शरण हैं	19-3-02 सायं 4	17 मिनट
308	ग्वालबालों को क्या मालूम था श्रीकृष्ण भगवान हैं?	18-4 19-3-02 प्रातः5	16 मिनट
309	बूढ़े जामवन्तजी की बात हनुमानजी ने मानी, आप मेरी बात मान लो	20-6-02	15 मिनट
310	हुकुम, कहना, प्रार्थना मान लो + भजन	04-07-02 प्रातः5	22 मिनट
311	जहाँ भगवानके हुए, पाप ताप सब मिट गये	25-07-02 प्रातः5	17 मिनट
312	एक माला ऐसी भगवानके अलावा दूजी बात याद नहीं आवे	8-3-03 बो. 3:30	18 मिनट
313	धनुष टूट गया तो ब्याह तो हो गया	2-10-03 13-9-97 प्रातः5	24 मिनट
314	सबसे बढ़िया और सुलभ बात – वासुदेवः सर्वम्	3-10-03 प्रातः5	19 मिनट
315	सेठजी का सपना	22-05-02 प्रातः5	13 मिनट
316	काम क्रोध में न चाहते हए भी बह जाते हैं	22-05-02 प्रातः5	4 मिनट
317	गीताप्रेस पुस्तक घरमें पड़ी पड़ी कल्याण कैसे करती	10-03-02 सायं 3	2 मिनट
318	मीराबाई के जैसे भगवानमें प्रेम कैसे हो	10-03-02 सायं 3	14 मिनट
319	मेरी भेंट पूजा	20-02-00 प्रातः9	34 मिनट
320	कपाट खोल दो	20-08-03 प्रातः5	32 मिनट
321	जीवनदान दे दो	17-09-03 प्रातः5	26 मिनट
322	सत्संग रोजाना करने की आवश्यकता	13-09-97 प्रातः5	7 मिनट
323.324	किस कारण सत्संग करते हुए भी लाभ नहीं हो रहा, सेवा आदर करो		10,8 मिनट
325	जल्दी से जल्दी सुगमता से कैसे कल्याण हो	31-08-96 प्रातः5	12 मिनट
326	सत्संग की बातें काम में लाओ	14-08-97 प्रातः5	9 मिनट
327,328	मैं, तू, यह, वह सब भगवान 22-8-96, सुख दुःख से ऊँचा कैसे उठे		10,8 मिनट
329,330	मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवन्त, रंग खिल जायेगा	19-3-96	9,16 मिनट
331	बुद्धि की स्थिरता – एक निश्चय	25-07-95 प्रातः5	12 मिनट
332	शरीर मैं नहीं मेरा नहीं	6-08-96 प्रातः5	15 मिनट
333	भगवत्प्रेम, भगवद्दर्शन करने का पक्का विचार	21-04-96 प्रातः5	11 मिनट
334	हरि से लागे रहो भाई	21-08-96 प्रातः5	10 मिनट
335	सन्त भगवन्त का भक्त वही जो सबकी सेवा करें	29-08-96 प्रातः5	8 मिनट
336,337	सत्संग, भगवन्नाम महिमा 6-1-97, अपनी उत्कट अभिलाषा	22-1-97	5,13 मिनट
338	सन्त से संबंध मान लेते हैं पर बात नहीं मानते	26-8-97 प्रातः5	11 मिनट
339	मन चंगा तो कठौती में गंगा	03-08-93 प्रातः5	4 मिनट

340	तत्परता से आज्ञापालन कर अपना कल्याण करें	20-07-90 प्रातः8	10 मिनट
341	दृढ़ भगवद् विश्वास से भगवान प्रकट हो जाये	03-03-96 प्रातः5	12 मिनट
342	ये रास लीला है 10-7-02 +मनमें जो भी आये सब भगवान 17-7-02		7 मिनट
343	माँगने गया सो मर गया	20-08-96 प्रातः5	8 मिनट
344	सच्चा संबंधी वहीं जो परमात्मा में लगाये		10 मिनट
345	संतों की अनुभवी बातों से लाभ	04-09-96 प्रातः5	9 मिनट
346	अपने खास पिता को भूल गये	23-08-96 प्रातः5	9 मिनट
347,348	दुःखमें प्रसन्न रह सकते हैं, भगवानका विधान कल्याण के लिये		10,11 मिनट
349	त्रिलोकी की सेवा	28-03-97 प्रातः5	14 मिनट
	विशेष दिव्य मार्मिक सत्संग		
350	अनन्य निष्ठा		38 मिनट
351	एक इष्ट, एक ग्रंथ, एक समय व एक आसन	24-05-91 प्रातः5	24 मिनट
352	सन्तों में अनन्य निष्ठा	10-10-94 प्रातः5	20 मिनट
353	चेतावनी – सत्संग का मौका हर समय नहीं मिलता	06-01-89 रात्रि8	27 मिनट
354	चेतावनी – अवसर मत चूको	05-12-97 सायं4	24 मिनट
355-357	चेतावनी सत्संग-	10-07-98 प्रातः9, 21-08-92 प्रातः5, 14-04-94 प्रातः5	19,21,23 मि.
358,359	चेतावनी सत्संग-	02-09-00 प्रातः9, 22-01-97 प्रातः5	40,29 मिनट
360	समय महिमा सत्संग- समय का सदुपयोग	03-07-91 प्रातः5	20 मिनट
361,362	समय महिमा सत्संग-	06-01-92 प्रातः5, 26-08-92 प्रातः5	24,26 मिनट
363,364	उद्देश्य मुख्य बनाये 8-5-01, कल्याण व उसके मार्ग का निश्चय		29,27 मिनट
365-367	दृढ़ता-	28-11-95 प्रातः5, 19-6-93 प्रातः5, 4-1-91 प्रातः5	27,24,21 मि.
368	भगवद्स्मृति व चेतावनी	6-12-95 प्रातः8	48 मिनट
369	चातुर्मास के नियम व विचार मौन	16-7-97 प्रातः8	53 मिनट
370	अनुकूलता प्रतिकूलता – शुद्ध भगवानकी इच्छा	11-9-93 प्रातः5	23 मिनट
371	अनुकूलता प्रतिकूलता – भगवानका विधान पीयूष पानी	5-01-97	28 मिनट
372	अनुकूलता प्रतिकूलता – साधन सामग्री व दान देना टैक्स	1-07-97	23 मिनट
373	अनुकूलता प्रतिकूलता – बीमारी भगवानकी भेजी तपस्या	2-09-92	22 मिनट
374	भगवानके हैं – भगवानसे कहता हूँ स्वीकार कर ले	29-01-99 सायं4	55 मिनट
375	भगवानके हैं – मेरे तो गिरधर गोपाल व भगवानसे बँटवारा	20-9-99	32 मिनट
376,377	भगवानके हैं – उल्टी कसौटी मत लगाओ	6-2-93 सायं4	21,64 मिनट
378	भगवानके हैं – पक्का स्वीकार कर लो	28-6-98 प्रातः8	38 मिनट
379,380	भगवानके हैं – सारे योग सिद्ध हो जायेंगे	17-4-98 प्रातः8	25,54 मिनट
381-383	भगवानके हैं सत्संग –	17-2-00 प्रातः8, 20-05-91 प्रातः5, 24-09-00 प्रातः5	25,27,26 मि.
384-386	भगवानके हैं सत्संग –	29-1-99 प्रातः6, 13-03-98 प्रातः5, 19-10-98 सायं4	55,31,53 मि.
387,388	भगवानके हैं सत्संग –	17-12-99 प्रातः8, 28-04-99 सायं4	46,60 मिनट
389	पंचामृत – अहंता परिवर्तन व पंचामृत	19-3-96 प्रातः5	28 मिनट

390	पंचामृत – भगवानके हैं और भगवानका ही काम करेंगे		39 मिनट
391,392	पंचामृत – पतिव्रता उदाहरण 19-6-92, पंचामृत और सार बात 4-10-99		24,24 मिनट
393	शरणागति – आज भगवानके हो गये	31-10-97 सायं:4	26 मिनट
394	शरणागति – चिन्ता का कन्यादान	07-11-97 सायं:4	30 मिनट
395	शरणागति – सत्संगी गंगाजी के पत्थर	05-06-96 प्रात:5	25 मिनट
396-399	शरणागति सत्संग (4)	लगभग	–25--30 मिन.
400	शरणागति गीता में	02-12-93 सायं:6	60 मिनट
401	शरणागति – भगवानने मनुष्यको प्रेमके लिये बनाया	2ŀ12-92 प्रात:5	24 मिनट
402,403	सन्त सत्संग – आज्ञापालनसे विलक्षणता	13-4-91 प्रात:8	22,52 मिनट
404,405	सन्त सत्संग गुरु महिमा	7-4-95 रात्रि 10	29,55 मिनट
406,407	व्यापक परमात्मा सन्त रुपमें प्रकट, भक्त भगवानके भी भगवान		26,28 मिनट
408,409	सन्त सत्संग – सन्त महिमा 26-9-02, सत्संग का महत्व	30-3-94 सायं:4	48,30 मिनट
410	सन्त सत्संग – आज्ञापालन	23-1-96 प्रात:5	28 मिनट
411	सन्त सत्संग – रामजी भरतजी उदाहरण व कष्ट में आज्ञापालन		25 मिनट
412	सर्वभूतहिते रता: – सत्संग में लगा पैसा सफल	16-7-96 प्रात:5	26 मिनट
413,414	एक भी सच्चे प्रचार से	20-8-93 सायं:4	21,56 मिनट
415	सर्वभूतहिते रता: – वजनदार साधन	15-5-90 प्रात:8	35 मिनट
416	सर्वभूतहिते रता: – रामजी हो जाओ व गीताप्रेस चमक जायेगा		32 मिनट
417	सर्वभूतहिते रता: – पाशुपतास्त्र व रामबाण उपाय	06-03-92 सायं:4	33 मिनट
418	सर्वभूतहिते रता: – विश्वमात्रका हित	14-12-90 प्रात:5	23 मिनट
419	सर्वभूतहिते रता: – परस्परं भावयन्त:	27-08-97 प्रात:5	25 मिनट
420-423	प्रचार प्रसार व सर्वभूतहिते रता: सत्संग (4)	लगभग	–25--30 मिन.
424,425	प्रेम कैसे हो?	03-06-93 प्रात:8	28,51 मिनट
426	वासुदेव: सर्वम् – भगवानकी कृपा में तरान्तर हो जाये	11-06-94	25 मिनट
427	वासुदेव: सर्वम् – परमहित की बात	10-10-01	24 मिनट
428	बुराई रहित – कल्याण की उपरवारी	18-2-96 प्रात:5	26 मिनट
429	बुराई रहित – बुराई त्याग का नियम	02-12-92 प्रात:5	27 मिनट
430	रहति न प्रभु चित चूक हिये की	19-6-00 प्रात:8	26 मिनट
431	व्याकुलता – भगवानके लिये व्याकुलता कैसे हो	16-10-94 प्रात:5	27 मिनट
432	साधक संजीवनी व पाँच श्लोक महिमा	07-04-02 सायं:4	41 मिनट
433	गीताजी महिमा	3-7-93 प्रात:8	25 मिनट
434	परम सेवा की आवश्यकता महत्व	10-8-02 सायं4	28 मिनट
435	दूसरों को सुख पहुँचाने से लाभ	28-7-95 प्रात:8	56 मिनट
436	स्वभाव सुधार वास्तविक उन्नति	11-9-91 प्रात:5	26 मिनट
437	स्वभाव सुधार	24-11-91 प्रात:5	24 मिनट
438	घरमें एक के भी लगने से 71 पीढ़ी का कल्याण	17-11-93 सायं4	46 मिनट
439	अनन्यता व हे नाथ!	21-10-00 सायं4	47 मिनट
440	अन्तिम दिन की भेंट पूजा, पुनर्जन्म को निमंत्रण मत देना		25 मिनट

441,442	कमी खटकती नहीं 19-8-96 प्रात:5, दूसरों को सुख	23-9-92 प्रात:5	28,21 मिनट
443	विलक्षण प्रेम विलक्षण कृपा	9-12-96 प्रात:5	24 मिनट
444	निर्दोषिता स्वत: सिद्ध	11-11-96 प्रात:5	25 मिनट
445	अन्त समय में भगवन्नाम सुनाना चाहिये	5-8-99 सायं4	50 मिनट
446	सत्संग जप कीर्तन करते हैं पर प्राप्ति नहीं हो पा रही	17-2-96	25 मिनट
447,448	प्रेम भक्ति रास में प्रवेश 30-11-93 प्रात:5, कृपा से मौका	17-2-98 प्रात:5	27,35 मिनट
449	संसार के संबंध सेवा के लिये	9-2-95 सायं4	55 मिनट
450	मरी तरी बार बार नहीं आती व कृपापूर्ण अवसर	26-3-00 सायं4	55 मिनट
451	सावधानी की आवश्यकता	5-2-96 प्रात:5	29 मिनट
452	चोटी धोती क्यों नहीं	21-7-99 सायं4	36 मिनट
453	परिवार नियोजन गर्भपात नहीं करेंगे	31-12-98 सायं4	25 मिनट

त्यौहार सत्संग व भजन

	जन्माष्टमी सत्संग भजन		
454	भगवान प्रेमके भूखे है	18-8-95 रात्रि 11	27 मिनट
455	भगवानका प्राकट्य (आरती+स्त्रोत्पाठ)	10-8-93 रात्रि 12	32 मिनट
456,457	कपाट खोलो 20-8-03 प्रात:5, हृदयमें भगवानका जन्म	12-8-01 सायं4	24,53 मिनट
458,459	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भजन , बाल लीला भजन		3,5 घण्टे
460	श्रीकृष्ण लीला भजन		6 घण्टे
	राधाष्टमी सत्संग भजन		
461,462	राधा नाम की महिमा, राधा तत्व क्या है?		22,28 मि.
463	श्रीराधाजी भजन		1 घण्टा 45 मि.
	गीताजी सत्संग		
464,465	आज पावन दिन 17-12-91, श्रीमद्भगवद्गीता राजा ग्रंथ 16-12-99		34,3 मिनट
466	गीता प्रचारक के समान कोई प्यारा नहीं+भजन		40 मिनट
467,468	चिन्ता का उद्यापन कर दो 28-11-90, सुख कैसे मिले 28-11-90		21,40 मिनट
	दीपावली सत्संग		
469,470	सबके हृदयमें वास्तविक प्रकाश हो, भगवानको अपना माने		25,14 मिनट
471	निर्दोषिता स्वत: सिद्ध है ११.११.९६		24 मिनट
	गुरु पूर्णिमा सत्संग		
472,473	गुरु तत्व व एकनाथजी चरित, कृष्णम् वन्दे जगद्गुरुम्+भजन		32,40 मिनट
474	**गणेशजी चतुर्थी सत्संग-** गणेशजी प्रथम पूज्य+भजन		30 मिनट
475	**शरद् पूर्णिमा सत्संग-** परम रंक पारसु पावा+भजन		30 मिनट
476	**होली भजन**		01 घण्टा
477-479	**श्रीरामजन्म , श्रीसीतारामजी विवाह व वनवास लीला भजन**		1.5,5,3 घण्टा
480,481	**श्रीहनुमानजी भजन, शिवरात्री भजन**		32, 31 मिनट
482-638	**भक्तों की बातें** कुल समय – लगभग 6 घण्टे श्रीसेठजी, श्रीभाईजी, श्रीशरणानन्दजी व अन्य सन्तों के जीवनकी विशेष बातें		

639-682	स्वामीजी मीठी मीठी हँसी	कुल समय – लगभग 5 घण्टे

नानीबाई का माहेरा

683	भक्त नरसीजी परिचय,शिवजी से वरदान,रास लीलामें प्रवेश,श्रीकृष्ण मधुर मिलन, नानीबाई के ससुराल से पत्रिका मिलना	70 मिनट
684	भक्तों के साथ नानीबाई के ससुराल आगमन,संबंधियों द्वारा उपेक्षा,भगवान पर अटूट विश्वास, बाजारमें भक्तों संग हरि कीर्तन	70 मिनट
685	नरसीजी की करुण पुकार, ठाकुरजी द्वारा राधा रुक्मणी संग माहेरे की तैयारी, प्रभुका श्रीरंगजी के घर का मार्ग पूछना	70 मिनट
686	श्रीराधा रुक्मणिजी सहित प्रभु का रथ पर आगमन	73 मिनट
687	ठाकुरजी का माहेरा भरना व सबके लिये शिक्षा	72 मिनट

भजन माधुर्य

क्रम सं.	विशेष भजन	क्रम सं.	विशेष भजन
688	स्वामीजी की वाणी – हे मेरे नाथ	699	जहाँ बिराजे राधेरानी, कृपा बरस रही
689	हे कृपासिन्धु,सिरपर श्रीगोपाल,चाल रे	700	तेरा रामजी,नैया पार लगा,पछितायेगा
690	थारा हा हे नाथ,हम है जैसे आपके	701	भज गोविन्द,पलमें टिकट, तूने हीरो
691	कोटिन नमन, सन्त अमृत बरसावे	702	सच्चिदानन्द तू,कुछ उस दिन की सार
692	हे मेरे गुरुजन,प्यारा रघुवर,बीरा गंगा	703	कद भजसी रघुराई,कलिजुगमें सतजुग
693	लाखों प्रणाम,सिगरी नूता,संत कृपाकर	704	म्हारे ठाकुरजी री पूजा,म्हारा नटराजा
694	दैवी सम्पदा भक्तोंके नाम,प्रेम बढ़ाओ	705	तुमको भूलूँ,सच्चिदानन्द म्हारी माइ
695	मोको लाग्यो रे,मोको रामजी मिलायो	706	रामजी रो नाम,थापर दारमदार,म्हे थारो
696	गीता ज्ञान प्रचारक,प्यारे श्यामसुन्दर	707	पाओ प्रेम प्रभुका ,कछू लेना न देना
697	परम सेवा,जगतका मीठा मेवा,ब्रहनों ऐसा	708	हरि भक्ति रो रंग ,सिरपर साँवरिया रो हाथ
698	जीव क्यों नीचो उतर्यो,भजन बिना मुक्ति	709	जठहँ देखूँ,ढूँढ्यो जग,प्यारो प्रकट्यो

710	स्वामीजी वाणी में भजन (दधि दूगी रे, बड़े घर ताली,वो घर गुरुजी, गिरधर आवन की, साँवरी सूरत मेरे मनमें, मारे मति मैया,तेरे लाला ने, बनमें देख्या, कृपानिधान कृपा करिये, मत देखो करनी, अब चेत अज्ञानी , मूरख मन राम, नफा पाया, तेरे जावे, एक अचंभा, राम बिना)	99 मिनट
711	सन्त महिमा (हरि का नाम, प्यारा रघुवर, हे मेरे गुरुजन, म्हाने मिल्या महात्मा श्रेष्ठ, बापजी अमरलोक का, हे कोई ऐसा सेठ, दिन भाग हमारा, बड़भागी लख पावे, म्हारा आया, साधो भाई, सैया सदगुरुजी, संगत कर उन संतों , सतसंग सच्चे संत का, सुन मन उन सन्तों)	2.5 घण्टे
712	सत्संग महिमा (सन्त कृपाकर हेलो , सतसंग करो, आपा सतसंग में जावा, अकेला काई आवो रे, बीरा जनम सुफल, अवसर मत चूको, चाल रे, मोको रामजी, म्हाने सतसंग रो कोड, सत्संग में जावन दें, मोको लाग्यो रे, पड़ा सतसंग, राम सुमिर ले, सिगरी नूता, संत कहे, संत समागम होय, संत समागम करिये, सतसंग नहीं कीनो, सतसंग नित प्रति, संतों रामरामजी)	2.5 घण्टे
713	भगवानके हैं (मान लिया, हाँ महाराज, म्हे हाँ जिस्या, तू मेरा है, हे कृपासिन्धु, हम जैसे भी ह आपके, सच्चिदानन्द म्हारी माई, म्हे तो थारा हाँ हे नाथ, मैं तेरा हूँ, मैं हूँ जिस्यू ही, मैं थारो, म्हे तो रामजी, मेरे तो गिरधर, रामजी हमारे बापू, ईश्वर को अपना मान ,आपका हूँ,नाथ मैं थारो)	2.25 घण्टे
714	चेतावनी 01 (जीव क्यूँ,भज गोविन्द,पलमें टिकट,कद भजसी, बन्दा थारी,भजन बिना,संत कहे, कलिजुग हाका, जनम लियो, हरि का गुण, ले हरिको नाम ,मत ले भजन,जपो रे,दिन नीके,हरि भजन, सिर मौत खड़ी)	2 घण्टे

715	**चेतावनी 02** (पछितायेगा, उड़ जायेगा, किसका लिया, हरि भजो रे, कुछ उस दिन की सार सच्चिदानन्द तू, ऐसा अवसर, गोविन्द क्यों नही, यो जग झूठो, मतवारी ये, नर तेरा, सुन मन, यहाँ मतलब, क्या तन माँजता, ये दो दिन, राम गुण, जनम मरण रा साथी, तूने हीरो, जाग रे, कछू थिर नही)	2.25 घण्टे
716	**प्रेम,पुकार,शरणागति,कृपा 01** (प्रेम जगावो जी, म्हारो थापर दारमदार, ऐसी कृपा, दैवी सम्पत्ति भक्तोंके नाम, रामजी रो नाम, म्हारे ठाकुरजी, म्हारा, नटराजा, कृपा बरस, सिर पर श्रीगोपाल, नाथ थारे शरण आयो, अचरज आवे, साँवरियाजी सूँ, भज गोविन्द, नीदरली नहिं, मैं जानो नाहिं, कुंजन बन)	3.5 घण्टे
717	**प्रेम,पुकार,शरणागति,कृपा 02** (अब तो लाग्यो, मेरी बन जायेगी, काई गुनगान, पतितपावन, हे नाथ तुम्हारे चरणों, परम प्रभु, अब हम सोवे, मेरी नैया पार, मैं हूँ भगतन को दास, सबसे ऊँची प्रेम सगाई, नन्द के कन्हैया, हरि ही हमारे मात पिता, स्याम तोहि)	1.5 घण्टे
718	**वासुदेवः सर्वम्** (प्यारो प्रकट्यो, जठहँ देखूँ, तू ही है, देखूँ थाने, बन गये आप अकेले, ढूँढ्यो जग सारो, थे तो अगणित, दरशण कर लीज्यो, नाथ थाने, ढूँढ थक्या, जग के करतार, नमस्कार प्रभु, अब काह कहूँ, वाह वाहजी, म्हारा मालिक, जित देखूँ, जयविराटरूपा)	2.5 घण्टे
719	**साधन, पुकार 01** (चाल रे, बीरा गंगा, जान बुराई नहीं करेंगे, तेरा रामजी, नैया पार, मैं नही मेरा नहीं, आवो रे, वो घर गुरुजी, ईश्वर को अपना, मुझे है काम ईश्वर, मोको रामजी, बोल मति, हरि से लगे, बचाओ प्रभु, उथल पुथल, भक्तों की मदद, बहनों ऐसा गहना, डरते रहो, जीव तू, जायेगी लाज)	2.5 घण्टे
720	**साधन, पुकार 02** (भजो रे, सहज समाधि, चालो मन, सुख दुख आटा, भाई रे, नाम से तिर, इतना तो करना, निर्धन को धन राम, घनश्याम तुम्हारे, नहिं छोड़ो, वह शक्ति हमें देना, भगवान आपके चरणों, तरी काया, रामजी ने मुखा, रमया बिना, मन रे निज)	2.5 घण्टे
721	**वैराग्य भजन** (कछू लेना न देना, राम सुमिर, वाह वाह रे, नफा पाया, लीवी है)	25 मिनट
722	**गीताजी भजन** (जय जग जननी, ऐ तो गायो, प्यारे श्यामसुन्दर, गीता ज्ञान प्रचारक, पीवो गीता, जय श्रीगीता माता की, गायो अद्भूत गीत, अनोखी थारी, गीतामाँ की दीक्षा, गीता हृदय भगवानका, समझ मन, हर हर बैठा, सुन अर्जुन, क्या जादू, धर्म ग्रन्थों में, धीम धीम, गीता निज घर, गोविन्द म्हाने)	1.5 घण्टे
723	**गणेशजी भजन** (प्रथम देव गणेश, विघ्न निवारण, मैं विनय करूँ, गणपति बेगा आइजो..)	25 मिनट
724	**गंगाजी,गौ रक्षा,माता पिता व अन्य भजन**	1.25 घण्टे
725	**मीराबाई भजन** (मेरे तो गिरधर गोपाल, म्हारे सिर पर साँवरियो रो हाथ, राणाजी तेरे...)	06 घण्टे
726	अन्य गायक भजन	1.25 घण्टे

संकीर्तन रस

727-729	**स्वामीजी वाणी कीर्तन व कीर्तन महिमा** (म्हारे रामजी रा, जय सीताराम, मुख राम कृष्णा, प्रभु सत्चेतन, कृष्ण कन्हैयो, भज गोविन्द, जय राधाकृष्ण)	04,34,49 मिनट
730-733	हरे राम हरे कृष्ण	7,8,12,14 मिनट
734-736	हरे राम हरे कृष्ण	18,22,27 मिनट
737-739	राम राम कीर्तन	12,17,18 मिनट
740,741	रामा श्री रामा, श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारी – श्रीस्वामीजी	39,32 मिनट
742	हरे राम हरे कृष्ण – श्रीस्वामीजी	20 मिनट
743,744	हरे राम हरे कृष्ण – दोहावाला, हरे राम हरे कृष्ण	57,66 मिनट
745-747	श्रीराम जय राम जय जय राम, राम राम कीर्तन	14,33,72 मिनट
748-750	जय सीताराम, जय जय सीतापति रामा, राम राम पद सहित	10,9,20 मिनट
751-753	हरिः शरणम् – श्रीस्वामीजी, श्रीशरणानन्दजी व बजरंगजी	4,3,3 मिनट
754-756	हे मेरे नाथ, गोपाला तेरा प्यारा नाम है, म्हे तो म्हारे रामजी रा	28,13,4 मिनट
757,758	श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारी, श्रीकृष्ण शरणम् नमः	23,7 मिनट
759-761	राधे अलबेली, जब सन्त मिलन, राधे राधे कृष्णा	7,16,9 मिनट
762,763	84 कोस यात्रा, हरे राम हरे कृष्ण	45,26 मिनट

जीवनोपयोगी सत्संग (सभी सत्संग लगभग एक घण्टे के)

764	सरल गृहस्थ जीवन	783	कलियुग के गुरु	801	साधनकी दो प्रणालियाँ
765	धन का सदुपयोग	784	निषिद्ध कर्मों का त्याग	802	शरणागति
766	संसारमें रहने की विद्या	785	विलक्षण साधन	803	मन कैसे लगे
767	बालकों के प्रति	786	दुःख नाश का उपाय	804	सत्संग और सन्त
768	सत्संग सुनने की विद्या	787	निर्विकल्प कैसे हो	805	नामजप की विधि
769	दुर्व्यसनों का त्याग	788	मुक्ति सहज है	806	भगवन्नाम महिमा
770,771	भक्त भगवान 01,02	789	समता की महिमा	807	परम प्रभु अपने ही में पायो
772	कर्मयोग से कल्याण	790	सहज साधन	808	भगवत् संबंध
773	स्त्रियों के प्रति	791	तत्वज्ञान कैसे हो	809	भगवत् कृपा
774	कर्म, सेवा और पूजा	792	साधकों के प्रति	810	समय की महत्ता
775	प्रेम कैसे हो	793	साधक कैसा हो	811	वास्तविक लगन
776	घर कैसे सुधारे	794	गुरु से लाभ कैसे लें	812	दोष दृष्टि का निषेध
777	माँ और उसकी सेवा	795	निर्दोष कैसे बने	813	घोर पाप मत करो
778	परिवार नियोजन हानि	796	क्रोध नाश का उपाय	814,815	चेत करो,चेतावनी
779	गर्भपात का निषेध	797	तू ही तू	816	मनुष्य शरीर की महिमा
780	विद्यार्थियों के लिये	798	विषय रस निवृत्ति	817	कर्म और कर्ता
781	शोक नाश का उपाय	799	अन्त मति सो गति	818	गाय की महिमा
782	लोभ का त्याग	800	स्फूर्णाओं से कैसे छूटे	819	किसानों के प्रति

820-908	**चुप साधन/करण निरपेक्ष साधन**	कुल समय – लगभग 37 घण्टे
909-961	**अखण्ड रामायण पाठ** (आरती,हनुमान चालीसा व रामराज्याभिषेक सहित)	25.5 घण्टे
962	**108 अखण्ड हनुमान चालीसा** (कीर्तन व आरती सहित)	5 घण्टा
963	**सुन्दरकाण्ड का पाठ** (आरती,हनुमान चालीसा सहित)	2 घण्टे 15 मिनट

नवान्हपरायण रामायण पाठ (सत्संग भजन सहित)

		घण्टे				घण्टे
964	प्रथम दिवस (बालकाण्ड 1-55)	2	मध्यमविश्राम	965	(बालकाण्ड 56-120)	2
966	द्वितीय दि. (बालकाण्ड 121-183)	2	मध्यमवि.	967	(बालकाण्ड 184-239)	2
968	तृतीय दि. (बालकाण्ड 240-304)	2.5	मध्यमवि.	969	(बालकाण्ड 305-358)	2.5
970	चतुर्थ दि. (बाल. 359 – अयोध्या.60)	2.5	मध्यमवि.	971	(अयोध्याकाण्ड 61-116)	2.5
972	पञ्चम् दि. (अयोध्याकाण्ड 117-176)	2.5	मध्यमवि.	973	(अयोध्याकाण्ड 177-236)	2.5
974	षष्ठम् दि. (अयोध्याकाण्ड 237-312)	2.5	मध्यमवि.	975	(अयोध्या.313 – अरण्य.29(क))	2.5
976	सप्तम् दि. (अरण्य.29(ख) – किष्कि.29)	2.5	मध्यमवि.	977	(किष्किन्धा.30 – लंका.12(क))	2.5
978	अष्टम् दि. (लंकाकाण्ड 12(ख)-77)	3	मध्यमवि.	979	(लंका. 78 – उत्तर.10(ख))	2.5
980	नवम् दि. (उत्तरकाण्ड 11(क)-114)	3	मध्यमवि.	981	(उत्तरकाण्ड 115-130)	2.5

पूर्णाहूति – आरती, श्रीरामराज्याभिषेक, पद गान व हनुमान चालीसा सहित

गीता साधक संजीवनी

982 परिशिष्ट का नम्र निवेदन एवं गीता का खास लक्ष्य

क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक
983	01	1	1022	02	3	1061	02	42,43	1100	03	14,15
984	01	2	1023	02	4	1062	02	44	1101	03	16
985	01	3	1024	02	5	1063	02	45	1102	03	17
986	01	4,5,6	1025	02	6	1064	02	46	1103	03	18
987	01	7	1026	02	7	1065	02	47	1104	03	19
988	01	8	1027	02	8	1066	02	48	1105	03	20
989	01	9	1028	02	9	1067	02	49	1106	03	21
990	01	10	1029	02	10	1068	02	50	1107	03	22
991	01	11	1030	02	11	1069	02	51	1108	03	23,24
992	01	12	1031	02	12	1070	02	52	1109	03	25,26
993	01	13	1032	02	13	1071	02	53	1110	03	27
994	01	14	1033	02	14	1072	02	54	1111	03	28
995	01	15	1034	02	15	1073	02	55	1112	03	29
996	01	16	1035	02	16	1074	02	56	1113	03	30
997	01	17,18	1036	02	17	1075	02	57	1114	03	31
998	01	19	1037	02	18	1076	02	58	1115	03	32
999	01	20	1038	02	19	1077	02	59	1116	03	33
1000	01	21,22	1039	02	20	1078	02	60	1117	03	34
1001	01	23	1040	02	21	1079	02	61	1118	03	35
1002	01	24,25	1041	02	22	1080	02	62,63	1119	03	36
1003	01	26	1042	02	23	1081	02	64,65	1120	03	37
1004	01	27	1043	02	24	1082	02	66	1121	03	38
1005	01	28,29,30	1044	02	25	1083	02	67	1122	03	39
1006	01	31	1045	02	26	1084	02	68	1123	03	40
1007	01	32	1046	02	27	1085	02	69	1124	03	41
1008	01	33	1047	02	28	1086	02	70	1125	03	42,43
1009	01	34,35	1048	02	29	1087	02	71	1126	04	1
1010	01	36	1049	02	30	1088	02	72	1127	04	2
1011	01	37	1050	02	31	1089	03	1,2	1128	04	3
1012	01	38,39	1051	02	32	1090	03	3	1129	04	4
1013	01	40	1052	02	33	1091	03	4	1130	04	5
1014	01	41	1053	02	34	1092	03	5	1131	04	6
1015	01	42	1054	02	35	1093	03	6	1132	04	7
1016	01	43	1055	02	36	1094	03	7	1133	04	8
1017	01	44	1056	02	37	1095	03	8	1134	04	9
1018	01	45	1057	02	38	1096	03	9	1135	04	10
1019	01	46,47	1058	02	39	1097	03	10,11	1136	04	11
1020	02	1	1059	02	40	1098	03	12	1137	04	12
1021	02	2	1060	02	41	1099	03	13	1138	04	13,14

क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक
1139	04	15	1181	05	18	1223	06	32	1265	07	28
1140	04	16	1182	05	19	1224	06	33	1266	07	29
1141	04	17	1183	05	20	1225	06	34	1267	07	30
1142	04	18	1184	05	21	1226	06	35	1268	08	1,2
1143	04	19	1185	05	22	1227	06	36	1269	08	3
1144	04	20	1186	05	23	1228	06	37	1270	08	4
1145	04	21	1187	05	24	1229	06	38	1271	08	5
1146	04	22	1188	05	25	1230	06	39	1272	08	6
1147	04	23	1189	05	26	1231	06	40	1273	08	7
1148	04	24	1190	05	27,28	1232	06	41	1274	08	8
1149	04	25	1191	05	29	1233	06	42	1275	08	9
1150	04	26	1192	06	1	1234	06	43	1276	08	10
1151	04	27	1193	06	2	1235	06	44	1277	08	11
1152	04	28	1194	06	3	1236	06	45	1278	08	12,13
1153	04	29,30	1195	06	4	1237	06	46	1279	08	14
1154	04	31	1196	06	5	1238	06	47	1280	08	15
1155	04	32	1197	06	6	1239	07	1	1281	08	16
1156	04	33	1198	06	7	1240	07	2	1282	08	17
1157	04	34	1199	06	8	1241	07	3	1283	08	18
1158	04	35	1200	06	9	1242	07	4,5	1284	08	19
1159	04	36	1201	06	10	1243	07	6	1285	08	20
1160	04	37	1202	06	11	1244	07	7	1286	08	21
1161	04	38	1203	06	12	1245	07	8	1287	08	22
1162	04	39	1204	06	13	1246	07	9	1288	08	23
1163	04	40	1205	06	14	1247	07	10	1289	08	24
1164	04	41,42	1206	06	15	1248	07	11	1290	08	25
1165	05	1	1207	06	16	1249	07	12	1291	08	26
1166	05	2	1208	06	17	1250	07	13	1292	08	27
1167	05	3	1209	06	18	1251	07	14	1293	08	28
1168	05	4	1210	06	19	1252	07	15	1294	09	1
1169	05	5	1211	06	20	1253	07	16	1295	09	2
1170	05	6	1212	06	21	1254	07	17	1296	09	3
1171	05	7	1213	06	22	1255	07	18	1297	09	4,5
1172	05	8,9	1214	06	23	1256	07	19	1298	09	6
1173	05	10	1215	06	24	1257	07	20	1299	09	7
1174	05	11	1216	06	25	1258	07	21	1300	09	8
1175	05	12	1217	06	26	1259	07	22	1301	09	9
1176	05	13	1218	06	27	1260	07	23	1302	09	10
1177	05	14	1219	06	28	1261	07	24	1303	09	11
1178	05	15	1220	06	29	1262	07	25	1304	09	12
1179	05	16	1221	06	30	1263	07	26	1305	09	13
1180	05	17	1222	06	31	1264	07	27	1306	09	14

क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक
1307	09	15	1349	10	27	1391	11	30	1433	13	1
1308	09	16,17,18	1350	10	28	1392	11	31	1434	13	2
1309	09	19	1351	10	29	1393	11	32	1435	13	3
1310	09	20	1352	10	30	1394	11	33	1436	13	4
1311	09	21	1353	10	31	1395	11	34	1437	13	5
1312	09	22	1354	10	32	1396	11	35	1438	13	6
1313	09	23	1355	10	33	1397	11	36	1439	13	7
1314	09	24	1356	10	34	1398	11	37	1440	13	8
1315	09	25	1357	10	35	1399	11	38	1441	13	9
1316	09	26	1358	10	36	1400	11	39	1442	13	10
1317	09	27	1359	10	37	1401	11	40	1443	13	11
1318	09	28	1360	10	38	1402	11	41,42	1444	13	12
1319	09	29	1361	10	39	1403	11	43	1445	13	13
1320	09	30	1362	10	40,41	1404	11	44	1446	13	14
1321	09	31	1363	10	42	1405	11	45	1447	13	15
1322	09	32	1364	11	1	1406	11	46	1448	13	16
1323	09	33	1365	11	2	1407	11	47	1449	13	17
1324	09	34	1366	11	3	1408	11	48	1450	13	18
1325	10	1	1367	11	4	1409	11	49	1451	13	19,20
1326	10	2	1368	11	5	1410	11	50	1452	13	21
1327	10	3	1369	11	6	1411	11	51	1453	13	22
1328	10	4,5	1370	11	7	1412	11	52	1454	13	23
1329	10	6	1371	11	8	1413	11	53	1455	13	24
1330	10	7	1372	11	9	1414	11	54	1456	13	25
1331	10	8	1373	11	10,11	1415	11	55	1457	13	26
1332	10	9	1374	11	12	1416	12	1	1458	13	27
1333	10	10	1375	11	13	1417	12	2	1459	13	28
1334	10	11	1376	11	14	1418	12	3,4	1460	13	29
1335	10	12,13	1377	11	15	1419	12	5	1461	13	30
1336	10	14	1378	11	16	1420	12	6	1462	13	31
1337	10	15	1379	11	17	1421	12	7	1463	13	32
1338	10	16	1380	11	18	1422	12	8	1464	13	33
1339	10	17	1381	11	19	1423	12	9	1465	13	34
1340	10	18	1382	11	20	1424	12	10	1466	14	1
1341	10	19	1383	11	21	1425	12	11	1467	14	2
1342	10	20	1384	11	22	1426	12	12	1468	14	3
1343	10	21	1385	11	23	1427	12	13,14	1469	14	4
1344	10	22	1386	11	24	1428	12	15	1470	14	5
1345	10	23	1387	11	25	1429	12	16	1471	14	6
1346	10	24	1388	11	26,27	1430	12	17	1472	14	7
1347	10	25	1389	11	28	1431	12	18,19	1473	14	8
1348	10	26	1390	11	29	1432	12	20	1474	14	9

क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक	क्रम सं.	अध्याय	श्लोक
1475	14	10	1517	16	7	1559	17	26	1601	18	42
1476	14	11	1518	16	8	1560	17	27	1602	18	43
1477	14	12	1519	16	9	1561	17	28	1603	18	44
1478	14	13	1520	16	10	1562	18	1	1604	18	45
1479	14	14	1521	16	11	1563	18	2,3	1605	18	46
1480	14	15	1522	16	12	1564	18	4	1606	18	47
1481	14	16	1523	16	13	1565	18	5	1607	18	48
1482	14	17	1524	16	14	1566	18	6	1608	18	49
1483	14	18	1525	16	15	1567	18	7	1609	18	50
1484	14	19	1526	16	16	1568	18	8	1610	18	51,52,53
1485	14	20	1527	16	17	1569	18	9	1611	18	54
1486	14	21	1528	16	18	1570	18	10	1612	18	55
1487	14	22	1529	16	19	1571	18	11	1613	18	56
1488	14	23	1530	16	20	1572	18	12	1614	18	57
1489	14	24,25	1531	16	21	1573	18	13	1615	18	58
1490	14	26,27	1532	16	22	1574	18	14	1616	18	59
1491	15	1	1533	16	23	1575	18	15	1617	18	60
1492	15	2	1534	16	24	1576	18	16	1618	18	61
1493	15	3	1535	17	1	1577	18	17	1619	18	62
1494	15	4	1536	17	2	1578	18	18	1620	18	63
1495	15	5	1537	17	3	1579	18	19	1621	18	64
1496	15	6	1538	17	4	1580	18	20	1622	18	65
1497	15	7	1539	17	5,6	1581	18	21	1623	18	66
1498	15	8	1540	17	7	1582	18	22	1624	18	67
1499	15	9	1541	17	8	1583	18	23	1625	18	68
1500	15	10	1542	17	9	1584	18	24	1626	18	69
1501	15	11	1543	17	10	1585	18	25	1627	18	70
1502	15	12	1544	17	11	1586	18	26	1628	18	71
1503	15	13	1545	17	12	1587	18	27	1629	18	72
1504	15	14	1546	17	13	1588	18	28	1630	18	73
1505	15	15	1547	17	14	1589	18	29	1631	18	74
1506	15	16	1548	17	15	1590	18	30	1632	18	75
1507	15	17	1549	17	16	1591	18	31	1633	18	76
1508	15	18	1550	17	17	1592	18	32	1634	18	77
1509	15	19	1551	17	18	1593	18	33	1635	18	78
1510	15	20	1552	17	19	1594	18	34	1636	गीताजी आरती व महात्मय	
1511	16	1	1553	17	20	1595	18	35			
1512	16	2	1554	17	21	1596	18	36,37			
1513	16	3	1555	17	22	1597	18	38			
1514	16	4	1556	17	23	1598	18	39			
1515	16	5	1557	17	24	1599	18	40			
1516	16	6	1558	17	25	1600	18	41			

साधकों के लिये संजीवनी बूटी

गीता साधक संजीवनी

सम्पूर्ण गीता

1637-1654	**श्रीस्वामीजी वाणीमें गीतापाठ व आरती** (18 अध्याय)	कुल समय- 4.5 घण्टे
1655-1656	गीतापाठ लगभग 2घण्टे में, **संगीतमयी गीताजी**	कुल समय- 5.5 घण्टे
1657-1676	**गीता सीखो** (पढ़ने की विधि, 18 अध्याय, आरती)	कुल समय-11.5 घण्टे
1677-1694	**गीता माधुर्य** (18 अध्याय)	कुल समय- 8.5 घण्टे
1695-1718	**गीता सुधा तरंगिनी** (गीताजी 7 से 18)	कुल समय- 6.3 घण्टे
1719-1720	गीता सार, गजल गीता	04,16 मिनट

परम श्रद्धेय सेठजी श्रीजयदयालजी गोयन्दकाजी वाणीमें सत्संग

1721	श्रीमन्नारायण नारायण	1730	भक्ति मिश्रित कर्मयोग	1739	हमेशा याद रखो
1722	गृहस्थाश्रम में प्राप्ति	1731	परमात्मा में प्रेम के लिये	1740	ऊँच्च काटि का साधन
1723	श्रद्धा	1732	आनन्दमयी परमात्मा का ध्यान	1741	वैराग्य झटपट कैसे हो
1724	नरोत्तमदास ब्राह्मण	1733	असर क्यों नहीं होता	1742	अनन्य और विशुद्ध प्रेम
1725	मनुष्य जीवन	1734	महापुरुषों का प्रभाव	1743	श्रद्धा और विश्वास
1726	कोई मेरा नहीं	1735	वैराग्य	1744	भजन निरन्तर हो
1727	भगवानको याद रखो	1736	समय का मूल्य	1745	दहेज का विरोध
1728	शरीर,मन,वाणी का तप	1737	समय और मन	1746	बलिवैश्य
1729	कर्मयोग का विवेचन	1738	भाव बदलना है	1747	गौ सेवा

श्रीसेठजी के पेड (मेहन्त श्रीक्षमारामजी महाराज के द्वारा)

1748	ग्रंथोंमें गीता सर्वश्रेष्ठ	1762	सबमें भगवद्बुद्धि	1776	भगवत्प्राप्त पुरुषों के
1749	मन की चंचलता कैसे मिटे	1763	शोक निवृत्ति	1777	तीर्थों की महिमा
1750	गीताका उपदेश कई युगो	1764	गीताका उपदेश	1778	भगवानकी लीला
1751	घरमें रहते हुए त्याग	1765	साधनको आधार देना	1779	गृहस्थमें रहते हुए
1752	महापुरुषों की हर क्रिया	1766	भगवानका स्मरण करनेसे	1780	मैं भगवानका हूँ
1753	पाँच चीजों का त्याग कैसे	1767	भक्त और भगवान	1781	भगवानपर विश्वास
1754	भगवानके नामसे तत्काल	1768	नियमों के पालनसे	1782	साधुओं में
1755	धर्म में अधर्म	1769	भगवान और महापुरुष	1783	नेम टेम प्रेम
1756	एक क्षणमें परिवर्तन	1770	प्रेम का वर्णन	1784	विवेक के अनुसार
1757	व्याकुल होकर	1771	जो मुझे हृदयमें	1785	एक निष्ठ भक्ति
1758	अच्छे आचरणों की	1772	मनुष्य जन्म अन्तिम	1786	भावपूर्ण व्यवहार
1759	ये समय फिर कहाँ	1773	भगवानके नामका	1787	भगवानका जन्मोत्सव
1760	भजनकी आवश्यकता	1774	प्रमाद ही मृत्यु		
1761	स्वार्थ रहित सेवा	1775	मैं शरीर नहीं हूँ		

1788-1816	**ध्यानावस्थामें प्रभुसे वार्तालाप तथा श्रीप्रेमभक्तिप्रकाश**	कुल समय- 5 घण्टे
1817-1820	**कीर्तन - श्रीसेठजी की वाणीमें**	

अमोघ नारायण अस्त्र व मंत्रों का महामन्त्र

हे नाथ ! हे मेरे नाथ ! मैं आपको भूलूँ नहीं।

परम श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारजी वाणीमें सत्संग

1821-1843	रासपञ्चाध्यायी पर विवेचन	कुल समय-10 घण्टे
1844-1858	वेणुगीत पर विवेचन	कुल समय-15 घण्टे
1859-1966	श्रीकृष्ण बाल-लीला	कुल समय-60 घण्टे

श्रीभाईजी वाणीमें सत्संग

1967	शरणागति से प्रेम प्राप्ति	1980	कृपा से विषय भोग का हरण	1992	असली प्रेम की पहचान
1968	भगवन्नाम में रुचि	1981	भगवानका विरह	1993	रास और आनन्द
1969	चरित्र निर्माण की बातें	1982	सर्वत्र भगवद् दृष्टि	1994	साधन की उपयोगी बातें
1970	भगवद्विश्वास	1983	भगवानकी चाह कैसे पैदा हो	1995	प्रेम प्राप्ति का साधन
1971	श्रद्धा से लाभ	1984	भगवान पर निर्भर हो जाये	1996	भगवानकी प्रेम परवशता
1972	प्रभु का ध्यान	1985	भगवानको भगवानके लिये चाहना	1997	भगवत्प्राप्ति का सुख
1973	मुरली ध्वनी	1986	प्रेम के चाह के सूत्र	1998	वास्तविक शरण
1974	निकुंज लीला	1987	भगवत् प्रेम ही जीवन	1999	सद्गुणोंको भरनेका उपाय
1975	प्रेम में त्याग की मुख्यता	1988	प्रेम की आवश्यकता	2000	प्रेम का अनुभव
1976	रास का रहस्य	1989	शरणागति सर्वोपरि उपाय	2001	भजन ना होने में प्रमाद कारण
1977	रास पूर्णिमा	1990	भक्त भगवानका प्रेम	2002	भगवत्स्मरण का साधन
1978	प्रभु से प्रार्थना	1991	भगवानके हो जाये	2003	साधक को कैसे चलना चाहिये
1979	श्रीराधामाधव के प्रेम लीला की झलक				

परम श्रद्धेय स्वामीजी श्रीशरणानन्दजी व श्रीदेवकी माँ की वाणीमें

2004-2103	सत्संग स्वामी श्रीशरणानन्दजी वाणीमें	(प्रत्येक सत्संग लगभग 25 – 45 मिनट)
2104-2183	सत्संग श्रीदेवकी माँ की वाणीमें	(प्रत्येक सत्संग लगभग 40 मिनट के)
2184	प्रार्थना व हरिःशरणम्	

प्रश्नोत्तर मणिमाला(भक्ति-प्रेम,लगन,व्याकुलता)

2185	हम भगवानके हैं,भगवान हमारे हैं,इसका गहराईसे अनुभव कैसे?
2186	जीवनको साधनमय बनाने के लिये कैसे दृढ़ता लाये?
2187	आपके श्रीमुखसे जब जिस प्रकार की साधन चर्चा सुनाई देती है तब वही साधन अच्छा,सरल,सहज लगता। ऐसी स्थितिमें साधनमें दृढ़ता कैसे आवे?
2188	एक तरफ इलाहाबाद का कुम्भ स्नान है और दूसरी तरफ ये सत्संग का विलक्षण स्नान, कल्याणकामी साधकको ज्यादा लाभ किससे?
2189	भगवानमें अपनापन कैसे हो? भगवान ही प्यारे लगे।
2190	व्याकुलता कैसे बढ़े?
2191	भगवान हरदम साथ रहते,हृदयमें रहते, फिर दर्शन क्यों नहीं देते?
2192	प्रेम कैसे हो?
2193	भगवानके बिना रहा नहीं जाये,इसका उपाय बताये।
2194	भगवानका भजन करते हुए व्याकुलता नहीं होती।
2195	पूरा प्रयत्न किये बिना क्या कह सकते है कि हार गये?
2196	निश्चिन्तता और सन्तोष में क्या अन्तर है?
2197	पूर्व संस्कारवश कुछ याद आ जाये तो उपेक्षा करे या भगवानको पुकारे?

2198	जीव परमात्मा का अंश है, फिर परमात्मा से इतनी दूरी क्यों मालूम देती है?
2199	'मेरे तो गिरधर गोपाल....' व 'स्मृतिर्लब्धा' का प्रसाद भगवानसे माँग सकता हूँ?
2200	परमात्माको महत्व देते पर फालतू चिन्तन पहले से भी ज्यादा हो रहे हैं,क्या करे?
2201	इष्टदेव है सीतारामजी और भगवान श्रीकृष्ण, किसकी उपासना करूँ?
2202	हनुमानजी ने कहा आत्म दृष्टि से भगवानका अंश हूँ और देह दृष्टि से दास हूँ।
2203	वास्तविक भजन क्या है?
2204	श्रीसेठजी का भाव हमारे में कैसे आवे?
2205	उत्कण्ठता कैसे बढ़े?
2206	इसी जन्ममें परमात्मप्राप्ति कैसे करे?
2207	भगवानके हो गये,मान लिया,फिर साधन भजन की क्या आवश्यकता?
2208	भोग संग्रह में सुख बुद्धि कैसे मिटे?
2209	भगवानकी कृपा तो बहुत है पर कृपा का लाभ कैसे उठावे?
2210	मेरा किसीसे बहुत मोह है, भक्तिमार्ग में तीव्र लगन हो सकती है?
2211	भक्ति को मुक्ति से ऊँचा माना है। भक्ति क्या चीज है?
2212	आपकी बातें प्रिय लगती है पर उतारने में कठिनता होती।
2213	परिश्रम और पराश्रय छोड़कर भगवानका आश्रय लेने का क्या आशय?
2214	प्राप्ति के अनेक साधन बतलाये,उसपर विश्वास नहीं हो पाता, क्या कारण?
2215	पत्नी पुत्र की तरह भगवानके लिये आँसू क्यों नहीं आते?
2216	तत्परता की कमी कैसे दूर हो?
2217	भगवान ज्यादा गरज रखते तो खुद आकर दर्शन क्यों नहीं दे देते?
2218	जो भगवत् संबंधी चिन्तन,जप आदि में लगा हुआ है, उसकी क्या स्थिति?
2219	भक्ति की नहीं जाती, भक्ति मिलती है?
2220	आप साधनमें सबकी स्थिति जानते हैं, एक-एक को समय देकर वे कहाँ अटक रहें है, कृपया बतायें।
2221	भजन करने बैठते हैं तो ऐसी बात याद आती है कि आनन्द चला जाता है।
2222	हमारे हृदयमें भगवान विराजमान है फिर हृदयमें बुरी बातें क्यों आती हैं?
2223	आप सत्संग में फरमाये साधन में सन्तोष नहीं करना चाहिये पर जो शरणागत भक्त है वो भगवानके दर्शन नहीं चाहता,निश्चिन्त,निर्भय,नि:शोक रहना।
2224	11 करोड़ भगवन्नाम लेने से क्या भगवान के प्रेम का साक्षात्कार हो जाता है?
2225	आप कहते हैं भगवान कण कण में है और ये भी कहते हैं, हमको जाना पड़ेगा तो हमको कहाँ जाना होगा?
2226	हमें भोग, मान, बड़ाई क्यों अच्छे लगते है?
2227	जब ये आत्मसात् होता है(वासुदेव: सर्वम्) तो शरीर में नया अनुभव क्या होता है?
2228	बिना साधनके व्याकुलता संभव है क्या?
2229	रात को स्वप्नमें भगवानके दर्शन किये, क्या इसको भगवत्प्राप्ति मान लूँ?
2230	परम विश्राम ही परमात्मा का स्वरुप है। इस बात का खुलासा करें।
2231	हे नाथ! भगवानको भूलूँ नहीं व दसरी तरफ 'कुछ भी याद न करना' बताते हैं।
2232	ऐसा उपाय बताये परमात्मा का चिन्तन करना नहीं पड़े, होता रहे।
2233	प्रभु में प्रेम पाने के लिये भक्तों के चरित्त पढ़े।

2234	सच्ची लगन हो जाये
2235	व्याकुलता से चट काम हो जायेगा
2236	मैं केवल भगवानका हूँ, इसके लिये कुछ करना?
2237	एक बार सरलहृदयसे दृढ़तापूर्वक की जगह प्रेमपूर्वक कह सकते हैं?
2238	कर्तापन और पाप पुण्य माना हुआ है। इसका क्या अर्थ है?
2239	आप कहते है भगवानको मान ले जैसे कन्या पति को मानती है। कन्या के सामने तो पति है पर परमात्मा हमारे सामने शून्य रुप में है, क्या करें?
2240	परीक्षित की एक बार भागवत सुनने से मुक्ति हो गयी, हमने कई बार सुन ली, पर हमारी मुक्ति नहीं हुई?

प्रश्नोत्तर मणिमाला (वासुदेवः सर्वम् व चुप साधन)

2241	सब कुछ भगवान है-ये बात ठीक समझमें कैसे आवे?
2242	वासुदेवः सर्वम् जचँता है, पर राग द्वेष हो जाता है।
2243	सब कुछ वासुदेव अनुभव करना, हमारे बस की बात है या कृपासाध्य बात है?
2244	वासुदेवः सर्वम् मान लिया, क्या पूर्णता हो गयी? सिद्ध पुरुषों के क्या लक्षण?
2245	मैं वासुदेव हूँ और वासुदेव का अंश हूँ, ये दोनों साधन एक साथ चल सकते है?
2246	वासुदेवः सिद्धान्तके अनुसार प्रत्येक वस्तु को भगवान माने या वस्तुके अन्तर्गत व्याप्त माने?
2247	जगत से अतीत भगवान, जगत में भगवान और जगत् भगवान-कौनसी बात श्रेष्ठ?
2248	वस्तु में भगवान का आवाहन् करना या वस्तु को ही भगवान माने?
2249	सब कुछ भगवान ही है, ये कानोंसे सुन बुद्धि व मन के द्वारा विचार किया, स्वयं द्वारा कैसे विचार करे?
2250, 2251	प्रह्लाद के लिये खंभे से व गोपियों के लिये रास में प्रकट हुए, कलियुग में संसार रुप से प्रकट हुए मान सकते है? जनकजी के सामने भगवान श्रीरामरुप में आये और हमारे सामने संसाररुप से, दोनों में क्या फर्क?
2252	मानने मात्रसे श्रीजी के बराबर हो सकते है?
2253, 2254, 2255, 2256	जैसे बीज से ही वृक्ष है, ऐसे संसाररुप से भगवान है, विश्वास होता है, पर जोर लगा मानना पड़ता। वासुदेवः सर्वम् बार बार सुनते पर इस भाव में स्थिति नहीं हो रही। भगवानकी कृपासे राम नाम हृदयमें बैठ गया पर वासुदेवःसर्वम् नहीं हो पा रहा। वासुदेवः सर्वम् अनुभव में नहीं आ रहा, क्या करें?
2257	मैं नहीं हूँ, भगवान है। इसमें सन्तोष-ये ज्ञान है। असन्तोष-ये भक्ति है?
2258	सब कुछ वासुदेव है फिर बाकि क्या रहता?
2259	आप फरमाये वासुदेवः सर्वम् की भेंट चढ़ा दो। हम वास्तव में भेंट चढ़ा दिये या मन बुद्धि से चढ़ाये इसका क्या पता?
2260	भगवानकी जगह में और मेरी जगह भगवान है, फिर लोगों से व्यवहार कैसे करे?
2261	ये आदर, मान, बड़ाई, पैसा, संग्रह भगवान नहीं है क्या?
2262	सब कुछ भगवान है, मान लिया, अब भजन की क्या आवश्यकता?
2263	आप फरमाये सारा संसार भगवान ही है और ये भी कि संसार में हमारा कोई नहीं। दोनों बात विपरीत लगती है।
2264	आप कृपा करे कि सब भगवान है, ये दिखने लग जाये।

2265	अपने आपमें ही प्रियतम को कैसे स्वीकार किया जाये?
2266	वासुदेवः सर्वम् में मैं वासुदेव हूँ,ये ठीक है या मैं की जगह वासुदेव?
2267	परमात्मा सब जगह विराजमान है तो साधक को दूरी क्यों प्रतीत होती?
2268	भगवानके चतुर्भज, बंशीधारी रूप के दर्शन की इच्छा है।
2269	वासुदेव सर्वम् कई बार सुना, शंका नहीं पर अनुभव नहीं हो रहा।
2270	वासुदेव समझ लिया तो क्या भगवत्प्राप्ति हो गयी?
2271	पितर, देवताओं को माननेवालों के काम बन जाते, हम भगवानको मानते, हमारे काम नहीं बनते।
2272	सत् असत् दोनों भगवान है तो असत् का त्याग क्यों करे?
2273	वासुदेवः सर्वम् का अनुभव के बाद भी व्यवहार में नयी चीज खाने की और दोस्तों से बात करने की मनमें आती है।
2274	वासुदेवः सर्वम् दुर्लभ क्यों?
2275	मीराबाई तुकारामजी के तरह चिन्मय शरीर हो सकता है?
2276	वासुदेवः सर्वम् सिद्ध नहीं हुआ, क्या कारण है?
2277	संतोंके बताने पर भी सबमें भगवद् बुद्धि नही होती।
2278	वासुदेव सर्वम् में स्वार्थ त्याग
2279	'कुछ भी न करना'–ये परमप्रेम प्राप्त करने का साधन है?
2280	क्या साधारण आदमी चुप साधन कर सकते हैं?
2281	चुप साधनमें मन बहुत भटकता है।कोई ऐसी विधि जिससे मनमें एकाग्रता हो?
2282	चुप साधन करने बैठते, थोड़ी देर ध्यान लगता फिर संसार याद आ जाता।
2283	चुप साधन करते हुए नींद आ जाये तो?चुप साधन एकान्त में करें या समुदाय में?
2284	चुप साधन वाली स्थिति 20–30–40 सेकेंड से ज्यादा ठहरती नहीं।
2285	चुप साधन से निर्विकल्प बोध होता है या निर्विकल्प अवस्था?
2286	भक्ति हो जायेगी, मुक्ति हो जायेगी। दोनों में क्या अन्तर है?
2287	डेढ़ घण्टा गीतापाठ आदि करती हूँ,चुप साधन का समय नहीं मिलता, क्या करूँ?
2288	चुप साधन वर्षो से कर रहे,घण्टों बैठे सकते पर तत्व का अनुभव नहीं हो रहा।
2289	चुप साधन करते समय शान्ति रहती पर संतोष नहीं, आगे बढ़ना चाहते।
2290	जब चुप बैठते हैं शान्ति का अनुभव होता पर शाश्वत शान्ति नहीं।
2291	शरीर की क्रियाएँ तटस्थ हो देखते रहते तो चुप साधन की जरुरत है क्या?
2292	चुप साधन बहुत नीरस लगता, भजन कीर्तन की तरह रस कैसे आवे?
2293	कर्तापन मूर्खता से माना हुआ, पाप ताप सब जड़में है। इसका क्या अर्थ है?
2294	चुप साधन और वासुदेवः सर्वम्

प्रश्नोत्तर मणिमाला(साधक शंका समाधान)

2295	अपने को निर्बुद्धि मानने से सरलता आती है या समझदार मानने से?
2296	एक निष्ठ होने का उपाय बतावे
2297	सत्संग,जप,गीताजी पाठ में सबसे बढ़कर कौन?
2298	भगवद्स्मृति करनी पड़ती व संसार स्वतः याद आता।
2299	भगवानके दर्शन कैसे हो?

2300	जैसे नींद में परमात्मा में लीन हो जाते हैं,ऐसे जागृत में कैसे रहे?
2301	साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। शरीर मोक्ष का द्वार है?
2302	शरीर बिना साधन कैसे होगा?
2303	भगवत्प्राप्ति के उद्देश्य से सत्संग में आये पर अभी तक हुई नहीं। भगवत् प्राप्ति का क्या स्वरुप है? क्या उपाय है?
2304	क्रिया और पदार्थ पदार्थ प्रकृति है, ये समझमें आती है, ये स्वीकार कैसे हो?
2305	भक्तों के चरित्र पढ़ती और पर मुझे बात याद नहीं रहती?
2306	वर्तमानमें सुख ज्यादा दिखता, परिणाम पर नजर नहीं रहती, कैसे करे?
2307	अपरा प्रकृति से संबंध विच्छेद कैसे हो?
2308	एक माला ऐसी जिसमें दूसरी बात याद न आवे।
2309	पाप पुण्य, राग द्वेष और अज्ञान की सीमा क्या अन्त:करण तक ही है?
2310	सुनने सुनाने से ज्ञान नहीं होता, तो अनुभव कैसे किया जाये?
2311	किसीसे कुछ लेने की इच्छा है तो वो मोह ही हुआ ना?
2312	भोग सामने आने पर नहीं रह पाते
2313	वस्तु को अपनी नहीं माने और काममें ले या वस्तु अपने पास रखे ही नहीं?
2314	किसी की सेवा करते है, गलती हो जाने पर वो कड़वी वाणी बोलता है तो सेवा करनी चाहिये?
2315,2316	सत्संग से समाज में परिवर्तन। सत्संग से क्या पाप माफ होता?
2317,2318	सत्संग किसे कहते हैं? सत्संग सुनने की विधि क्या है?
2319	भगवानके दर्शन बन्द हो गये अनुभव कैसे हो?
2320	भगवद्दर्शन के अलावा और कुछ नहीं चाहिये।
2321	भगवानके दर्शन कैसे हो? भगवान के दर्शन की लालसा कैसे बढ़?
2322	भगवानकी शरणागति में मुख्य बाधा क्या है?
2323	भगवानसे मिलना चाहते ।
2324	कृपासाध्य का क्या अर्थ है?
2325	राग द्वेष मार्ग के लुटेरे
2326	दोषों के त्याग में अपने को असमर्थ पाते है
2327	दूसरों में दोष दृष्टि हो जाती है
2328	संसार का काम पहले करे या भजन पहले करें?
2329	भगवानको कर्म अर्पण
2330	पराश्रय क्या हुआ?
2331	सुख लोलुप्ता जल्दी कैसे मिट सकती?
2332	भजन क्या है?
2333	कर्मयोग के द्वारा स्वार्थ और अभिमान का त्याग
2334	वस्तु इच्छा से मिलती या प्रारब्ध से?
2335	क्या देवताओं की पूजा नहीं करनी चाहिये?
2336	मन का राग सरलतापूर्वक कैसे मिटे?
2337	साधना में दूसरी बातें याद आती है
2338	नाशवान् को छोड़ने का क्या तरीका है?

2339	साधन में बाधा किस कारण आती है?
2340	भगवानकी विस्मृति हो जाती है
2341	ब्रह्माण्ड में तिल जितनी चीज़ भी अपनी नहीं
2342	पुस्तक पढ़ना साधन
2343	सन्मुख होना क्या है?
2344	मानसिक पूजा से लाभ
2345,2346	करना राग मिटाने के लिये। संसार से राग कैसे मिटाया जाये?
2347	भगवानकी मर्जी का पता कैसे चले?
2348	ब्रह्मचर्य का पालन कैसे हो?,
2349	अप्राप्त की इच्छा होती है।
2350	नामजप और तीर्थ यात्रा कौनसा श्रेष्ठ ?
2351	सुगमतापूर्वक कल्याण हो सकता है क्या?
2352	इष्ट देव शंकर भगवान है। नाम रामजी का व स्वरुप शंकरजी अच्छा लगता
2353	कर्मयोगके थोड़े भी अनुष्ठान से महान् फल
2354	भाग्य और पुरुषार्थ में कौन प्रबल? क्या भाग्य में लिखा बदला जा सकता है?
2355	मनुष्य इस जन्मके कर्मका फल भोगता या कई जन्मों के?
2356	कैसे मालूम चले कि हमारी मुक्ति हो चुकी ?
2357	क्या स्त्री, शुद्र को भगवत्प्राप्ति हो सकती है ?
2358	मनुष्य पर विशेष भगवात् कृपा
2359	चौरासी लाख योनियों में भटकने का अन्त कैसे?
2360	मैं भगवानका हूँ, फिर भजन की क्या आवश्यकता?
2361	भगवान पाप करते समय रोकते क्यों नहीं?
2362	भगवान प्रत्यक्ष में प्रकट हो सकते है?
2363	कीर्तन के समय भगवानके कौनसे रुप का ध्यान
2364	कभी कभी कीर्तन जमता नहीं,इसका क्या कारण है?
	अनुकूलता प्रतिकूलता व सुख दुःख संबंधी प्रश्नोत्तर
2365,2366	सुखी दुःखी होना कैसे मिटे? सुख का नहीं, सुख की इच्छा का त्याग
2367	प्रत्येक परिस्थिति भगवत्प्राप्ति का साधन कैसे बने?
2368	अनुकूल प्रतिकूल परिस्थिति का ज्ञान
2369	अनुकूलता प्रतिकूलता में सुखी दुःखी हो जाते
2370	सुख दुःखमें सम कैसे रहे?
2371	प्रतिकूल परिस्थिति आने पर चिन्तित हो जाती हूँ। क्या करना चाहिये?
2372,2373	साधक सिद्धि असिद्धि में सम। समता कैसे हो ?
2374-2382	**विकारों से छूटकारा संबंधी प्रश्नोत्तर** (क्रोध कैसे मिटे, स्वभाव सुधारने..)
2383-2385	**नाम जप संबंधी प्रश्नोत्तर**
2386-2388	**मन की चंचलता संबंधी प्रश्नोत्तर**

गुरु,सन्त व गीताजी संबंधी प्रश्नोत्तर

2389	शिष्य का क्या धर्म है?
2390	आज्ञापालन की तीन बात 25.11.91
2391	सन्त महात्मा की ज्यों की त्यों बात मानने क्या अर्थ?
2392	सम्प्रदाय के बिना मंत्र क्या निष्फल है ?
2393	लोग कहते गुरु बनाये बिना कल्याण होता नहीं,पर आप शिक्षा देते नहीं।
2394	राम नाम गुरु बनाके ले या बिना गुरु के ले सकते हैं?
2395	अच्छे सन्त के वचनों से प्रभावित होकर उनको मन से गुरु मान सकते है?
2396	गुरु का नाम बतानेवाला कालनेमी।
2397	गुरु के बिना कल्याण होगा क्या?
2398	सच्चे सन्त की क्या पहचान?
2399	पति पत्नी का एक गुरु या अलग बना सकते?
2400,2401	गुरु बनाने से क्या लाभ? गुरु की आवश्यकता।
2402,2403	गुरु कौन? बनावटी गुरु से साधक की क्या गति?
2404	एक गुरु से मन्त्र लेने के बाद दूसरे गुरु से मन्त्र लिया जा सकता है क्या?
2405	'गुरु बिना सब निष्फल गया' का अर्थ।
2406	मैंने आपको ही मन से गुरु मान रखा है,कौनसे मंत्र का जप करूँ?
2407	क्या गुरु बनाना चाहिये?
2408	माला जपना चाहते है पर किसीको गुरु नहीं बनाया।
2409	क्या किसी एक ही सन्त का सत्संग करना चाहिये?
2410	भगवानके चरणोंमें निष्काम प्रेम पाने की इच्छा है
2411	अपना इष्ट सन्त को बनाना चाहिये या देवी देवता को?
2412	भगवान राम कृष्ण ने भी गुरु किये।
2413	सच्चे हृदयसे भगवानमें बिना गुरु के लग सकते है क्या?
2414	गीताजी का प्रचार कौन कर सकता है ?
2415	गीता पढ़ने में संस्कृत अशुद्ध बोला जाता,पाप तो नहीं लगेगा?
2416	क्या गीता सन्यास का उपदेश देती है?
2417	भगवान कर्म करवाते नहीं पर फल देते है।
2418	योगक्षेम की चिन्ता मत कर, योगक्षेम मैं वहन करुँगा।
2419	न्याययुक्त चलता रहे भक्ति आप से आप हो जायेगी।
2420	गीतामें भगवानने कौनसे धर्म को छोड़ने के लिये कहा?
2421-2430	अन्य गीता संबंधी प्रश्नोत्तर

स्वभाव सुधार व पिता की सीख(बालकों के प्रति)

2431	बच्चों का स्वभाव कैसे सुधरे?
2432,2433	पिता की सीख, हमारी स्वास्थ्य रक्षक सेना
2434,2435	व्यायाम और खेलकूद, सिगरेट या बीड़ी की लत
2436,2437	पाचन और परिपुष्टि,भोजन व्यवस्था,
2438,2439	पानी, स्वच्छ वायु सेवन
2440-2441	फोटो का दैविक कैमरा नेत्र, शारीरिक मानसिक आत्मिक शुद्धि

प्रश्नोत्तर मणिमाला(गृहस्थ व व्यवहारिक संबंधी)

2442	गृहस्थमें रहते हुए भगवानमें सच्चा अनुराग हो सकता है?
2443	काम धंधा करते हुए चिन्तासे मुक्ति, मन की शान्ति के लिये उपाय बताइये।
2444	गृहस्थधर्म पालनकरते हुए, परमात्मा की प्राप्ति क्या हो सकती है?
2445	भक्ति करनेवालो को गृहस्थ का काम किस तरह से करना चाहिये?
2446	भगवानके अर्पण कर, भगवानका प्रसाद समझकर उसे काममें ले सकते हैं?
2447	भगवानको कर्म फल अर्पण करना कैसे होता है?
2448	आपके बताये रास्ते में चलने की कोशिश करे और परिवार वाले यदि विपरीत चले तो क्या करे?
2449	आजकल के बच्चे खराब बातों पर ध्यान देते है, उनको शिक्षा देते है तो उपहास उड़ाते है, उनका सुधार कैसे करें?
2450	किसी बालकको हित की भावनासे कहते हैं, वो बुरा मानता है और उससे हमारे को विक्षेप होता है?
2451	बच्चों को किस ढंग से समझावे कि वे सत्संग में आवे?
2452	माता पिता विवाह के लिये कहते और यहाँ सत्संग अच्छी लग रही,क्या करुँ?
2453	ऐसा संयम कैसे हो कि विषय की बिलकुल आशा ही समाप्त हो जाये?
2454	गृहस्थमें जिम्मेदारी व मोह में फँसा रहता है,तो प्राप्ति के लिये क्या गृहस्थ छोड़ दे?
2455	अभिमान में माँ का तिरस्कार कर यहाँ आया हूँ, आपके प्रवचन के प्रभावसे माता पिता की सेवा और भजन करूँगा।
2456	गृहस्थ में रहते हुए भजन कैसे हो?
2457	ये भावना रहती है कि हमारे बच्चे खुश रहे। ये मोह है या प्रेम?
2458	गृहस्थ के लिये सबसे अच्छा नाम और साधन
2459	क्या भक्ति के लिये गृहस्थ को सन्यास लेना जरुरी है?
2460	स्त्री धर्म में अलग रहना
2461	गायत्री मंत्र का अधिकार केवल ब्राह्मणों को क्यों?
2462	सबसे श्रेष्ठ गृहस्थाश्रम
2463	घरमें महाभारत रखनी चाहिये?
2464	हस्त रेखा के द्वारा क्या भाग्य का निर्णय
2465	बहनों को शिवलिंग,शालीग्रामजी,हनुमानजी स्पर्श निषेध
2466	धर्म क्या है ?
2467	एकादशी कौनसी करें? स्मार्त या वैष्णव?
2468	क्या बजरंग बाण का पाठ कर सकते हैं?
2469	अच्छे आदमी दु:खी और पापी सुखी क्यों?
2470	सब भगवान कराते फिर पाप पुण्य के भोगी हम क्यों?
2471	स्वच्छता और पवित्रता में क्या अन्तर?
2472	तीर्थ में रहने के नियम
2473	विधवा माताओं को सहायता। विधवा को क्या पीहर में रहना चाहिये?
2474	गंगाजी की महिमा व स्नानका समय। गंगा दशहरा क्यों बनाया जाता है?
2475	प्लास्टिक का निषेध। पानी कम खर्च करो।

2476	विद्यार्थी को क्या सावधानी रखनी चाहिये?
2477	यात्रा में नियम पालन में कठिनाई। लम्बी दूरी की यात्रा में स्नान नहीं कर पाते।
2478	भोजन कपड़े ब्राह्मण को दे या ब्राह्मणी को?
2479	संसारमें रहते हुए बन्धनों से मुक्त होने का उपाय।
2480	विघ्नों के आने का क्या कारण है?
2481	प्रतिकूलतामें भगवानकी कृपा का अनुभव कैसे करे?
2482	भगवान,उनका नाम और चिन्तन में कौनसा उत्तम है?
2483	स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिये उपाय बताये।
2484	जनेऊ धारण न करने वाला क्या गायत्री सन्ध्या करे?
2485	स्त्रियों को शिवजी पर जल चढ़ा सकती है क्या?
2486	माता बहनें रुद्राक्ष माला पहन सकती है क्या ?
2487	माताएँ सुन्दरकाण्ड पाठ कर सकती व तुलसीमाला पहन सकती?
2488	सुतक में माला,गीता,रामायण का पाठ
2489	स्त्री धर्म में अन्न जलको हाथ नहीं लगाना चाहिये
2490	बहनों क्या अशुद्ध अवस्था में गीता,रामायण पढ़ सकती?
2491	अशुद्ध अवस्था में माताओं को तुलसीमाला फेरनी, गंगास्नान स्नान नहीं करना चाहिये
2492	क्या स्त्री धर्म के समय राम नाम लिख सकते हैं?
2493	स्त्रियाँ गायत्री मंत्र क्यों नहीं पढ सकती?
2494	शिवलिंग,शालीग्रामजी,हनुमानजी को स्त्रियों क्यों नहीं छू सकती?
2495	क्या नरमादेश्वर महादेव की पूजा स्त्रियाँ कर सकती?
2496	सौन्दर्य सामग्री- मूक जानवर को निर्दयतापूर्वक हिंसा
2497	क्या स्त्री को पुनर्विवाह करना चाहिये ?
2498	क्या गर्भपात किये हुए घर की कन्या से विवाह कर सकते?
2499	कुछ भी लिखने से पहले भगवानका नाम लिखें।
2500	गुप्त दान क्या है ?
2501	गृहस्थों का संग्रह के बिना काम कैसे चलेगा ?
2502	सेवा से संबंध विच्छेद होता है
2503	माँ बाप देश में रहते हें,हम उनकी सेवा कैसे करे?
2504	अनाथालय से बच्चे गोद ले सकते है क्या ?
2505	बच्चों का नाम क्या रखें?
2506	अपना ही कोई रिश्तेदार खराब काम करने लगे तो क्या करे?
2507	सत्संग काम में लाओ।
2508	सत्संग में प्रसन्नता पर व्यवहार क्षेत्र में लोभ क्रोध ।
2509	सत्संग करता है और झूठ कपट भी करता है।
2510	घरवाले सत्संग में जाने से मना करते हैं। बेटे सत्संग में जाने से रोकते हैं।
2511	गृहस्थ में रहते हुए भगवत्प्राप्ति कैसे ?
2512	सत्संग करने से लोग मजाक उड़ाते है।
2513	भगवानकी पूजा करनेवाले दुःखी और पापी सुखी क्यों?
2514	कोई सतावें दुःख देवे तो क्या करना चाहिये ?

2515	पतिदेव के क्रोधसे घरका वातावरण दूषित हो जाता
2516	पति के दुर्व्यसन मिटाने के लिये पत्नी क्या करे?
2517	पति शराब पीते हैं। पति का चाल चलन अच्छा नहीं हैं
2518	पति सत्संग में जाने से मना करते हैं
2519	धन उपार्जन के लिये पाप करना पड़ता है
2520	टी.वी विडियो से नयी पीढ़ी खराब हो रही
2521	जादू टोटका करनेवालों से कैसे बचें ?
2522	चाँदी के वर्क चमड़े में बनता है।
2523	स्त्रियों को दीक्षा लेनी चाहिये या नहीं ?
2524	पत्नी को एकादशी व्रत करना चाहिये या नहीं ?
2525	क्या जनेऊ धारण नहीं करने से पूजा व्यर्थ जाती?
2526	सन्ध्या करना टैक्स। सन्ध्या करने का समय
2527	जनेऊ लेने से पाप नाश
2528	जनेऊ लेने वालों को किन नियमों का पालन करना चाहिये?
2529	हिन्दू संस्कृति में वेष-भूषा व व्यवहार
2530	चोटी धोती
2531-2535	गर्भपात,परिवार नियोजन व गर्भपात का प्रायश्चित
	अन्तिम समय, परम सेवा व संबंधी प्रश्नोत्तर
2536	आपके श्रीमुख से परमसेवा की जानकारी चाहते।
2537	बीमार को भगवन्नाम सुनाने की महिमा
2538	मृत कुटुम्बियों, बड़ों के लिये भागवत श्राद्ध आदि करवा दिये।अब भगवानमें लग गये। अब भी श्राद्ध तर्पण आदि कराना चाहिये? हमारे आगे सन्तान नहीं।
2539	गया श्राद्ध कब कराना चाहिये?
2540	अन्त समयमें याद करने से गति होती है?
2541	कोई भगवन्नाम सुनना नहीं चाहवे तो सुनाये?
2542	भगवन्नाम सुनाने से घरवाले मना करे तो क्या करे?
2543	डाक्टर कहते है, हल्ला क्यों करते हो?क्या उसकी भी परवाह नहीं करे?
2544	अन्तिम समय बीमारी के कारण मरणासन्न नाम न सुनना चाहवे तो क्या करे?
2545	मना कर दने पर भी सत्संगी गुप्त रुप से नाम सुनावे, उससे लाभ होगा?
2546	रात्रिमें पार्थिव शरीर रखने के समय लोगों का नाम सुनानेमें उत्साह नहीं।
2547	व्यक्ति अपने परिवारवालों को कि मुझे मरणासन्न समयमें नाम सुनाना तो अन्त समयमें मना करने पर भी नाम सुनावे?
2548	क्या मृत्यु भोज शास्त्र सम्मत है ?
2549	मृत्यु के बाद खर्च- विधिनुसार, आडम्बर नहीं
2550	मन में आत्महत्या करने की आती है।
2551	किसी आदमी ने आत्महत्या कर ली, उसके कल्याण का कोई उपाय है क्या?
2552	मृत अविवाहित मनुष्यके संबंधी कोई काम करे तो उसको शान्ति मिलती
2553	कन्या पक्ष की मृत स्त्री के मोक्ष का क्या उपाय?
2554-2677	**अन्य विभिन्न विषयक प्रश्नोत्तर**

2678-2767	**अन्तिम वर्षों में पूजनीय श्रीस्वामीजी के विशेष सत्संग (सन् 2000-2005 तक)– विशेष छूट** मुक्ति का क्षेत्र खोल दिया। राम नाम की लूट..... (कुल समय - लगभग 54 घण्टे)
2768-2770	**अन्तिम सत्संग प्रसाद (29,30-6-05 व लाखों प्रणाम)** 9,8,8 मिनट
2771-2785	**गीताके परम प्रचारक पुस्तक** (गीताप्रेस के संस्थापक सेठजी श्रीजयदयालजी गोयन्दकाजी का जीवन परिचय (कुल समय - लगभग 7 घण्टे)
2786-2796	**कल्याणके तीन मार्ग पुस्तक – श्रीस्वामीजी वाणीमें** (कुल समय - लगभग 7 घण्टे)
2797-2806	**आरती संग्रह व हनुमान चालीसा** (श्रीगणेशजी, श्रीकुंज बिहारीजी, गीताजी, गंगाजी, श्रीहनुमानजी, श्रीसीताजी, श्रीराधाजी, जय जानकीनाथा, जय जगदीश हरे)
2807-2850	षोडशगीत, श्रीराधाकृपाकटाक्ष, मधुराष्टक, अष्टयाम् लीला
2851-2855	**स्तोत्र संग्रह** (विष्णुसहस्त्रनाम्, नारायण कवच, रामरक्षास्तोत्र, गजेन्द्रमोक्ष, रुद्राष्टकम्)
	भागवत कथा
2856-2909	महन्त श्री 1008 श्रीक्षमारामजी महाराज द्वारा (कुल समय - लगभग 67 घण्टे)
2910-2969	श्रीराजेंद्रदास देवाचार्यजी महाराज द्वारा (कुल समय - लगभग 56 घण्टे)
2970-3000	**भक्तमाल कथा** (कुल समय - लगभग 31 घण्टे)

हे मेरे नाथ! भगवानकी दलाली का काम पुस्तक प्रचार गीताप्रेस गोरखपुर GITA PRESS, GORAKHPUR **मैं आपको भूलूँ नहीं**

जो आदमी लोगोंको परमात्माकी तरफ लगा देता है,उसकी दलालीमें भगवान् उसके हाथ बिक जाते हैं। महात्माको मोल खरीदना चाहो तो सहज उपाय यह है कि उसके सिद्धान्तका प्रचार करनेके लिये अपना तन, मन, धन लगा देवे और अपने-आपको भी उसके अर्पण कर देवे, यही भगवान्को खरीदने का उपाय है। अतः हम लोग अर्जुन की तरह अपनी योग्यता एवं सुविधानुसार निमित्त बनकर इस कार्य में उत्साह से लगे।ऐसा मौका भगवानकी कृपासे मिलता है। जैसे मनुष्य शरीर मिलना दुर्लभ है, ऐसे ही यह प्रचार-प्रसार का मौका मिलना दुर्लभ है।

卐 श्रीहरिः 卐

विलक्षण सन्त विलक्षण वाणी विलक्षण ग्रंथ

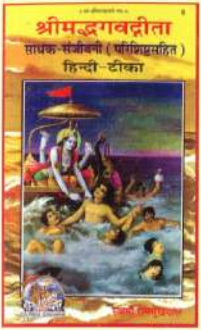

गीता साधक-संजीवनी

परम श्रद्धेय स्वामीजी
श्रीरामसुखदासजी महाराज
के अनुभवी, अमूल्य भाव रत्नों का खजाना। साधक के लिये संजीवनी बूटी गीता साधक-संजीवनी। साधन करने के लिये साधक को कहीं जानेकी, किसीसे पूछने की जरुरत नहीं, केवल एक साधक–संजीवनी पासमें रखें। अन्य पुस्तक की उम्रभर जरुरत नहीं।

www.sadhaksanjivani.com

साधन-सुधा-सिन्धु

साधकोपयोगी दुर्लभ ग्रन्थ

श्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके पूर्वप्रकाशित महत्त्वपूर्ण प्रवचनों एवं लेखोंका अनूठा संग्रह

"हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणं"

घर से जब भी बाहर जायें या कोई भी काम शुरु करने से पहले चार बार नारायण नारायण कहने से भगवानसे जुड़ जायेंगे और विपत्तियों से छूट जायेंगे।

नारायण! नारायण! नारायण! नारायण!

Contact: Dulichandji 7988886115 ; Sandeepji 9725163635

Sponsored by – Karnal Manav Seva Sangh (Year 2025)

परम पूज्य डोंगरेजी महाराज के दुर्लभ यूट्यूब विडियो के लिए कृपया QR Code scan करें।

ગુજરાતી
ભાગવત
કથાનાં
91 વિડિયો

हे नाथ! मैं जैसा भी हूँ, आपका हूँ; आप जैसे भी हो, मेरे हो।

1,08,000 श्री राम नाम मंत्र लेखन (212 ग्राम वजन) की विलक्षण बुक की नि:शुल्क यथाशक्य प्राप्ति के लिए कंचनजी 8689813347 को पूरा एड्रेस Pincode के साथ whatsapp करें। लिखित 10 बुक के सामने चाहोगे तो डोंगरेजी का 1100+ पन्ने का Exclusive 'श्रीमद भागवत रहस्य' शक्तिपात करनेवाला गुजराती Deluxe प्रासादिक ग्रंथ नि:शुल्क मिलेगा।

हे नाथ! मैं आपकी शरण में हूँ, आप कृपा करें, मैं आपको भूलूँ नहीं।

कुछ न चाहो-काम आ जाओ ❁ कोई और नहीं-कोई गैर नहीं

Video 1 | Challenge of Ramsukhdasji – Scan QR | Video 2

पारमार्थिक उन्नति इतनी सुगम सरलता से कि जिसमें भविष्य नहीं है और क्रिया और पदार्थ की जरूरत नहीं है। यह बात कहीं भी मिलती नहीं है। आप इतनों के सामने मैं कहता हूँ, किसी जगह मिली है तो आप बताओ। एक जगह (शरणानन्दजी से) ही मिलती है, दो जगह मिलती ही नहीं। इतनी बढ़िया बात इतनी सरल इतनी सुगम मैंने कहीं नहीं देखी है, कहीं सुनी नहीं है। किसी भाषा में देखी नहीं है, सुनी नहीं है। (प्रवचन 17-8-2001, 8:30 am)

शरणानन्दजी के सम्पूर्ण साहित्य की pdf के लिए scan 10 Volumes QR

Vol-1 | Vol-2 | Vol-3 | Vol-4 | Vol-5

शरणानन्दजी की बातें सम्पूर्ण शास्त्रों का अन्तिम तात्पर्य है । -रामसुखदासजी

Vol-6 | Vol-7 | Vol-8 | Vol-9 | Vol-10

शरणानन्दजी की करण-निरपेक्ष साधन शैली ही सर्वोच्च है -रामसुखदासजी

Color Pamphlet

वैश्विक मतभेदों का अकाट्य समाधान

क्रान्तिकारी सन्तवाणी PDF QR

शरणानन्दजी

समग्र सन्तवाणी का नया अवतरण

हिन्दू, मुसलमान, इसाई आदि सभी लाभ उठा सके ऐसी मानव-मात्र को एक-मत करनेवाली शरणानन्दजी की वाणी के लिए Radio में code 2004 से 2103 और देवकीजी की वाणी के लिए code 2104 से 2183 नंबर search करें। “सर्वमान्य शुद्ध सत्य” को देश, काल, मत, वर्ग, सम्प्रदाय, मझहब का भेद छू नहीं सकता है।

मज़हब सम्प्रदाय की उलझनें शरणानन्दजी से ही सुलझेगी !

रामसुखदासजी समर्थित शरणानन्दजी की क्रांतिकारी विचारधारा में साधक को किसी के पदचिन्हों पर नहीं चलना है, अपितु निज विवेक के प्रकाश में रहना है अर्थात स्वाधीनतासे अपनी आँखों देखना हैं, अपने पैरों चलना हैं।

Humanity’s Own Sharnanandji